सम्पादकीय विचार क्रान्ति अभियान की सफलता हमारे शिष्यत्व की अग्नि परीक्षा है 2

महाराष्ट्र में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान का व्यापक विस्तार 3

जीवन महान उद्देश्यों के लिए जिएँ। - डॉ. प्रणव जी 7

देश के मानचित्र पर उभरती गुरुदेव की जन्मभूमि आँवलखेड़ा 8

गुरुसत्ता का दर्द बाँटने के लिए उमड़े अंतस् के भाव 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

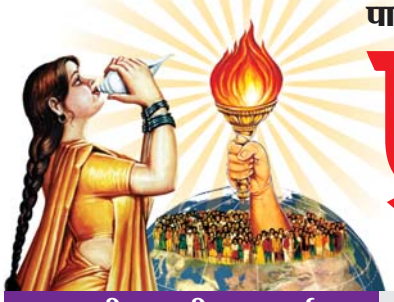

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 दिसम्बर 2022

वर्ष : 35, अंक : 12

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 दिसम्बर 2022

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

युग चेतना विस्तार के लिए प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का अभियान चलायें

वर्तमान युग में विज्ञापन का महत्त्व कौन नहीं जानता? हर व्यक्ति के चारों ओर अच्छे-बुरे विज्ञापनों की भरमार है। व्यापारी, राजनैतिक दल, विभिन्न एजेंट सभी अपनी-अपनी वस्तुओं का धड़ल्ले से विज्ञापन कर रहे हैं। हमें भी अपने कार्यक्रमों और आन्दोलनों का प्रचार करने के लिए मुहल्ले-मुहल्ले, गाँव-गाँव, घर-घर जाना ही पड़ता है। ऐसे में हमें अपने गायत्री परिवार के एकमात्र समाचार पत्र 'प्रज्ञा अभियान' का महत्त्व समझना चाहिए और इसके माध्यम से युगशक्ति गायत्री की नवसृजन चेतना को घर-घर पहुँचाने के लिए प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का विशेष अभियान चलाना चाहिए।

महत्व समझिये :- अपने नैष्ठिक कार्यकर्त्ता विभिन्न शिविर, सम्मेलनों में भाग लेकर सक्रियता की विविध धाराओं को भलीभाँति समझते हैं। लेकिन जो लोग इनमें भाग नहीं लेते, हम चाहते हैं कि वे अपने अभियान से जुड़ें, उन तक अपने विचारों, आदर्शों, योजनाओं एवं कार्यक्रमों के समाचारों की जानकारी नियमित रूप से पहुँचाते रहना आवश्यक है। यह मात्र कुछ मिनट की चर्चा से संभव नहीं, नियमित संवाद की आवश्यकता है।

सभी जानते हैं कि **प्रज्ञा अभियान एक समग्र मार्गदर्शिका है।** इसमें महापुरुषों के सामयिक विचार, सामयिक सक्रियता का मार्गदर्शन देने वाले संपादकीय आलेख के साथ शांतिकुंज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं क्षेत्रीय सक्रियता के समाचार व आवश्यक सूचनाएँ होती हैं। जो इन्हें पढ़ेगा, वह निःसंदेह गायत्री परिवार की ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकेगा। इसलिए इसे सृजनशील मानसिकता वाले हर भावनाशील एवं सामाजिक संगठन, बुद्धिजीवी, शिक्षक-विद्यार्थी, व्यापारी, अधिकारी, मीडियाकर्मी तक पहुँचाना आवश्यक है।

- प्रज्ञा अभियान की महत्ता को देखते हुए ही शांतिकुंज द्वारा **लागत मूल्य से मात्र एक तिहाई मूल्य पर ही परिजनों तक पहुँचाया जाता है।**
- डाक की गड़बड़ियों को देखते हुए **25 से अधिक पाक्षिक रजिस्टर्ड डाक से भेजे जाते हैं।**
- अतः निवेदन है कि पाठक भी प्रज्ञा अभियान की पाठक संख्या बढ़ाने पर विशेष ध्यान दें। दिसम्बर-जनवरी माह में इसके लिए विशेष अभियान चलायें। विभिन्न कार्यक्रमों में प्रज्ञा अभियान की सदस्यता के लिए प्रेरित करें। **हर शाखा-संगठन न्यूनतम 25 प्रज्ञा अभियान तो एक पते पर मँगाये ही।** इसे सदस्य बनाकर अथवा प्रचार रूप में सभी कार्यकर्त्ताओं एवं प्रभावशाली लोगों तक पहुँचाया जाना ही चाहिए।

ईश-चेतना से जुड़ो, सामर्थ्यवान बनो

युगसृजेता समर्थ बनें

युगसृजन के इन्जीनियरों को सामान्य जनों की तुलना में अधिक योग्यता अर्जित करनी पड़ती है और बड़ी जिम्मेदारी भी उठानी पड़ती है, ठीक उसी तरह जैसे पर्वतारोहियों को उच्च शिखर तक चढ़ने का श्रेय पाने के लिए, दुस्साहस कर सकने जैसा मानस बनाना पड़ता है। अपंग और आलसी तो मात्र ऐसी कल्पना ही करते रहते हैं। छोटे और थोड़े काम तो मनुष्य अपने हाथ-पैरों के सहारे ही कर लेता है पर जब बड़े काम करने की आवश्यकता पड़ती है तो बिजली, भाप आदि के माध्यम से ऊर्जा उत्पन्न करनी पड़ती है। चेतना क्षेत्र की इसी ऊर्जा को भगवान कहते हैं। समुद्र पार करने के लिए जलयान और आकाश में सैर करने के लिए वायुयान की जरूरत पड़ती है। मात्र शरीर सत्ता उसकी बड़ी महत्वाकांक्षाएँ पूरी कर सकने में असमर्थ ही रहती है।

आत्मा और परमात्मा के मिलन पर साधारण परिस्थितियों वाले व्यक्ति भी देव मानवों की भूमिका निभाने लगते हैं। शरीरधारी तो एक और एक मिलकर दो ही होते हैं, पर जीव और ब्रह्म की दो इकाइयाँ समता अपना लेती हैं, तब उनकी स्थिति 11 जैसी होने में देर नहीं लगती। युग परिवर्तन में देवोपम भूमिका निभाने के लिए व्यक्ति को समर्थ सत्ता का आश्रय लेना ही चाहिए। सुदामा, नरसी, विभीषण, जामवन्त आदि की निजी क्षमताएँ स्वल्प थीं, पर वे किसी बड़े का सहयोग प्राप्त कर लेने पर अतुलित बलशाली बन सकने में समर्थ हो गये थे।

भक्ति का सच्चा स्वरूप

बच्चे हाथी-घोड़े-गाय आदि की कल्पना मानस में जमाने के लिए उनके खिलौने तथा चित्र देखने भर से काम चला लेते हैं। खिलौने प्राप्त करने में कुछ बड़ा खर्च भी नहीं करना पड़ता और उनके भरण-पोषण का दायित्व भी नहीं होता, किन्तु इन्हीं प्राणियों को यदि असली रूप में पाना-पालना हो तो भारी-भरकम कीमत चुकाना और नित्य प्रति घास, पानी, छाया आदि का प्रबंध भी करना पड़ता है। इसी तरह जीवन्त और वास्तविक भगवान को पाने के लिए भी कुछ बड़ा साहस अपनाना और उपयुक्त साधन जुटाना पड़ता है। प्रतिमाओं के सम्मुख उपहार रखने और गुणगान करने से उस सत्ता की स्मृति तो उभरती है, पर उसके अनुदान-वरदान प्राप्त कर सकना संभव नहीं होता। बच्चों के खिलौने वाली गाय न तो दूध देती है, न ही बछड़ा।

पूजा-उपासना की परिचर्या अति सरल है। उसे सामान्य क्रिया-कलापों से कहीं अधिक सरलतापूर्वक सम्पन्न किया जा सकता है, किंतु असली भगवान का मिलन तो तत्काल भारी हलचल और उठक-पटक आरंभ कर देता है। पति की सम्पदा और सत्ता पर अधिकार करने के लिए पत्नी को पितृ-गृह छोड़ना और ससुराल में समर्पित भाव से रहना पड़ता है। भगवान से मिलन को यदि अत्यन्त सशक्त बनाने की आवश्यकता पड़े तो साथ ही इसी सिलसिले में यह भी गिरह बाँध लेनी चाहिए कि पैसा और वासना के लिए खपती रहने वाली जीवनचर्या से ऊँचा उठकर अपने को ऐसा कुछ बनाना पड़ेगा, जिससे उत्कृष्टता और उदारता के दोनों तत्व प्रत्यक्ष परिलक्षित होते, उभरते, उफनते दृष्टिगोचर होने लगें।

भगवद्कृपा की अनुभूति

ईश्वर का सबसे निकटवर्ती और सही स्थान अपना अन्तःकरण है। बाहर खोजने से तो दृश्यमान वस्तुएँ, जो जड़ पदार्थों की बनी हैं, वही मिलेंगी। देवालयों और तीर्थों में उनकी झलक झाँकी ही मिल सकती है, पर यदि वस्तुतः उसे पाना हो, तो कस्तूरी के मृग की तरह जहाँ-तहाँ भटकने की अपेक्षा यह उचित है कि अपनी नाभि को सूँघा जाए, अन्तःकरण को टटोला जाए।

ईश्वर के मिलन और बिछुड़न की स्थिति को तुरंत परखा और प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। दैवी सत्ता किसी पर अनुग्रह करती है, तो उसके मानस एवं क्रिया-कलाप में अद्भुत, आश्चर्यजनक परिवर्तन करती है। उन्हें क्षुद्रता की कीचड़ से उबार कर, महानता की साज-सज्जा से सजाती है। माता अपने शिशु को तभी गोदी में उठाती है, जब उसकी मल-मूत्र से सनी स्थिति को धोकर साफ कर लेती है। यही बात शत-प्रतिशत भगवद्भक्ति के सम्बन्ध में भी है। आग के साथ यदि ईंधन घनिष्ठता स्थापित करेगा, तो उसका समूचा स्वरूप अग्निमय हुए बिना रहेगा नहीं। नर-कीटकों की तुलना में नर-नारायणों का दृष्टिकोण ही नहीं, क्रिया-कलाप भी कुछ ऐसा हो जाता है, जो औरों जैसे नहीं वरन् अपने आप में कुछ विचित्र-विलक्षण, किन्तु उच्चस्तरीय दीख पड़ने लगता है।

परमात्मा जब भी आत्मा में मिलेगा, तो अपनी संवेदनाएँ शरणागत पर उड़ेले बिना न रहेगा। उसका कथन-परामर्श-मार्गदर्शन भली प्रकार सुनाई देने लगता है। भगवान का स्मरण करते ही उसके परामर्श रूपी अनुदानों का प्रवाह आने लगता है। जागो और जगाओ, उठो और उठाओ, चलो और चलाओ, उभरो और उभारो, जियो और जिलाओ, उछलो और उछालो, जैसे दुहरे आदेशों की झड़ी लग जाती है और उन्हें पूरा किये बिना किसी प्रकार, किसी क्षण चैन ही नहीं पड़ता। ऐसी ही स्थिति में रहते देखे जाते हैं वे भगवद्भक्त जिन्हें तात्कालिक आदेश के रूप में नवसृजन का पर्वत अपने कंधों पर उठाकर चलना है। उन्हीं को युगपुरुष, युगदेवता अथवा युगसृजेता कहलाने का श्रेय एवं संतोष मिल सकता है। अच्छा हो उस उपलब्धि को स्वीकार करने से इंकार न किया जाए। द्वार पर खड़े हुए सौभाग्य को ठोकर मार कर वापस न लौटाया जाए।

युगदेवता का आह्वान

समय की कसौटी पर खरे सिद्ध होने के लिए इन दिनों एक ही तैयारी में जुटना चाहिए कि किस प्रकार लोकमानस को परिष्कृत करने के लिए कटिबद्ध होकर नियन्ता का हाथ बँटाया जाए और बदले में वैसा कुछ पाया जाए, जैसा कि धरती से स्वर्ग तक छलांग लगा सकने वालों को तत्काल ही प्राप्त हो सकता है।

सज्जनों का, सत्प्रवृत्तियों का विस्तार ही नवयुग के अवतरण का प्रधान लक्षण है। दुर्जनों की दुर्बुद्धि ने ही समय के साथ अगणित समस्याएँ जोड़ी हैं। उनका निवारण और निराकरण संयमशील उदारचेता ही अपने पुरुषार्थ से संभव कर सकते हैं। उन्हीं का उत्पादन, अभिवर्धन और प्रशिक्षण नवसृजन प्रक्रिया का प्रमुख एवं प्रधान अंग है। उसी को संभव बनाने, संपन्न करने के लिए हम सबको समुद्र सेतु बाँधने वाले वानरों की तरह, गोवर्धन उठाने में सहायक बने ग्वालवालों की तरह साहस सँजोना चाहिए, भले ही योग्यता, संपन्नता एवं सुविधा का अभाव ही क्यों न प्रतीत होता हो।

अपने समय का प्रज्ञावतार ही प्राचीनकाल का मत्स्यावतार है। उसकी रटन, लगन और ललक निरन्तर विस्तार पर ही केन्द्रित रही है। आज भी हममें से प्रत्येक को एक से अनेक बनने का व्रत लेना चाहिए और उसे पूरा करने के लिए जिसकी जितनी श्रद्धा उमंगती हो, उससे कम पुरुषार्थ का परिचय नहीं ही देना चाहिए। प्रज्ञावतार के लक्ष्य को पूरा करने में कुछ ऐसा कर गुजरना चाहिए, जो अनुकरणीय और अभिनन्दनीय कहकर सराहा जा सके। ***

वाङ्मय खण्ड 29 (सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-2), पृष्ठ 4.60 से संकलित-सम्पादित

विचार क्रान्ति अभियान की सफलता हमारे शिष्यत्व की अग्नि परीक्षा है

एक से पाँच, पाँच से पच्चीस बनने वाली गुणन-अभिवर्धन प्रक्रिया में कहीं कोई व्यवधान अड़ना नहीं चाहिए। - प.पू. गुरुदेव

सद्विचारों की सामर्थ्य

महामना ईश्वरचंद विद्यासागर की परमार्थपरायणता से प्रायः सभी परिचित हैं। कहा जाता है कि वे अपनी कमाई का बहुत छोटा-सा अंश अपने और अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए रखते थे, शेष सारा धन दूसरों की भलाई के लिए, लोगों के जीवन को ऊँचा उठाने के लिए लगा दिया करते थे। एक दिन उन्होंने भीख माँगते एक बालक से आत्मीयतापूर्ण संवाद किया। उन्होंने बच्चे के भविष्य के सपने टटोले। बच्चे में कुछ करने की इच्छाशक्ति देखकर ईश्वरचंद विद्यासागर ने उसे भिक्षा नहीं दी, कुछ आर्थिक सहायता की और भीख माँगने की बजाय मेहनत कर जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

बच्चे ने वैसा ही किया। उस धन से बूट पॉलिश का सामान खरीदा और मेहनत कर पैसे कमाने लगा। एक दिन राह चलते ईश्वरचंद विद्यासागर जी को किसी युवक ने रोका और पास की जूतों की दुकान पर ले जाकर उन्हें दुकान के मालिक की तरह प्रतिष्ठित करते हुए भरपूर आदर-सत्कार किया, कहा, ''बाबूजी यह आप ही की दुकान है। आपकी दी प्रेरणा और सहायता ने मेरी जिंदगी बदल दी।''

विचारों में व्यक्तित्व को बदलने की गजब की सामर्थ्य होती है, यह हममें से भला कौन नहीं जानता? श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी अक्सर यह संस्मरण सुनाते हैं कि अपने जीवन से परेशान होकर आत्महत्या करने जा रहे एक युवक को उसके मित्र के घर टेबल पर रखी 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका मिल गई। उसने पत्रिका के कुछ पन्ने पलटे-पढ़े, जिसने उसका मन ही बदल दिया। मन में भीतर नए साहस का संचार हुआ, जिसके कारण वह आत्महत्या का विचार त्यागकर नए सिरे से, नए हौसले के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो गया।

ओडिशा में मोहन्ती नाम का एक नवयुवक अपने वरिष्ठ अधिकारियों को नियमित रूप से अखण्ड ज्योति देने जाया करता था। अखण्ड ज्योति के विचार और उन्हें घर-घर पहुँचाने के लिए मोहन्ती की लगन देखकर अधिकारी उसका बहुत सम्मान करते थे। वे कम्पनी के सामान्य कर्मचारी की तरह नहीं, एक पुरोहित के रूप में उससे प्रेम करते थे।

महात्मा बुद्ध ने अंगुलिमाल से एक ही तो प्रश्न किया था, ''मैं तो रुक गया, तू कब रुकेगा?'' अपने गुरु के मुँह से निकले एक विचार ने एक दस्यु को संत बना दिया।

अखिल विश्व गायत्री परिवार आम धार्मिक संगठन नहीं है। शान्तिकुञ्ज और शक्तिपीठें भी मात्र मनोकामनाएँ पूरी करने वाले धार्मिक संस्थान या मंदिर नहीं हैं। यह नवसृजन की दिव्य चेतना को घर-घर तक पहुँचाने के लिए एवं युग परिवर्तन के महान संकल्प को सिद्धि तक पहुँचाने के लिए समर्पित विचार क्रान्ति के केन्द्र हैं, एक क्रान्तिकारी अभियान हैं। ये जीवन साधना के ऐसे केन्द्र हैं, जहाँ साधना के आधार पर सृजन चेतना सतत प्रवाहित होती रहती है।

गायत्री परिवार त्याग और समर्पण की पृष्ठभूमि पर निर्मित एक विराट देव परिवार है। इस परिवार से जुड़े श्रद्धालु कुछ पाने की आकांक्षा से ज्यादा लोकमंगल के लिए स्वयं को समर्पित करने के लिए तत्पर रहते हैं। श्रद्धालुओं में लोकमंगल की यह हूक परम पूज्य गुरुदेव के ऐसे विचारों के प्रभाव से पैदा होती है, जिनने उनके जीवन को सार्थकता की ओर मोड़ा है, उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है।

विचार क्रान्ति-समय की माँग

तरह-तरह के शारीरिक एवं मानसिक अभिशाप झेल रही आज की बीमारू दुनिया को ऐसे ही उत्साहवर्धक, पथप्रदर्शक सद्विचारों की जरूरत है। विचार बदलें तो निरर्थक कार्यों में व्यतीत होता जीवन उत्थान की दिशा में अग्रसर हो जाए। निकृष्ट चिंतन ही तो घर, परिवार और समाज में व्याप्त क्लेश-कलह का प्रमुख कारण हुआ करता है। यदि सोच सही हो तो व्यक्ति नशे-कुरीतियों जैसी आत्मघाती प्रवृत्ति के चंगुल में क्यों फँसे? यदि परिवार का चिंतन उत्कृष्ट हो तो हर घर, परिवार एक ऐसा साँचा बन सकता है, जिसमें महामानव, देवमानव ढला करते हैं। मोहनदास करमचंद गाँधी को उनकी माता की बुनियादी शिक्षा-सत्य बोलना, मांसाहार न करना... आदि ने ही तो महात्मा बनाया था। सच पूछा जाए तो आज की दीन-दुःखी मानवता को स्वास्थ्य के लिए किसी टॉनिक से ज्यादा उचित जीवन-व्यवहार को अपने का साहस देने वाले सदविचारों की आवश्यकता है।

अब बारी हमारी है

परम पूज्य गुरुदेव ने 'आस्था संकट' को इस युग का सबसे बड़ा संकट बताया है। पतन, पराभव, हताशा, निराशा की ओर ले जा रही मानवीय आस्थाओं को उत्कृष्टता की ओर मोड़ने के लिए ही उन्होंने 'विचार क्रान्ति अभियान' चलाया है। उन्होंने लिखा है कि इस युग का महाभारत अस्त्र, शस्त्र से नहीं, बल्कि विचारों से लड़ा जाएगा। लोभ, मोह, अहंकार, असंतोष, स्वार्थ, संकीर्णता जैसे दुर्विचारों के रूप में असुरता मानव के मन-मस्तिष्क में जा बैठी है। सद्विचारों की सेना से ही उन्हें परास्त किया जा सकता है।

इस युग के प्रज्ञावतार परम पूज्य गुरुदेव की जीवनभर की साधना का नवनीत है उनके विचार, जिनके आधार पर वे दुनिया को बदल देने का दावा करते रहे हैं। उन्होंने कहा है, ''**मैं व्यक्ति नहीं विचार हूँ। मेरे विचारों को घर-घर पहुँचा दीजिये। ये विचार जहाँ जाएँगे क्रान्ति खड़ी करेंगे।**''

असुरता पर विजय पाने के लिए भगवान राम ने रीछ-वानरों का सहयोग लिया था। ग्वाल-बालों ने भगवान कृष्ण का कहना मानकर गोवर्धन पर्वत उठाने में, असुरता से लोहा लेने में उनका सहयोग दिया तो वे धन्य हो गए। बुद्ध के परिव्राजकों और गाँधी के सत्याग्रहियों की समझदारी स्तुत्य है, जिसने धर्म, संस्कृति और समाज को पतन-पराभव से मुक्ति दिलाने में अहम भूमिका निभाई। अब बारी हमारी है, युग निर्माण योजना से जुड़े नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं की। बारी है उन जाग्रत् आत्माओं की जो धर्म-पंथ की संकीर्णताओं को त्यागकर सचमुच मानवता को सही मार्ग दिखाने के लिए प्रयत्नशील हैं। जिन्हें पूज्य गुरुदेव के साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़कर जीवन धन्य बनाने का सौभाग्य मिला है, जो अपने आप को भगवान का साझेदार बनाने की इच्छा रखते हैं, उन्हें पूज्य गुरुदेव की विचार क्रान्ति अभियान को सफल बनाने की बात मान ही लेनी चाहिए।

शिष्यत्व की सार्थकता गुरु के बताये मार्ग पर चलने में है। जो उनकी इच्छाओं को पूरा करता है, सही मायनों में वही उनका प्रिय शिष्य है। हमें सदैव यह ध्यान में रखना चाहिए कि सद्गुरु माँगते नहीं हैं, वे तो पात्रता की परीक्षा लेते हैं और जो उनकी परीक्षा में सफल हो जाते हैं उन पर अनुदान-वरदानों की वर्षा कर उनका जीवन निहाल कर देते हैं।

समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी से शेरनी का दूध लाने की बात क्या सचमुच अपने पेट का दरद मिटाने के लिए की थी? गुरु गोविंद सिंह जी ने बलि देने का आह्वान जरूर किया था, लेकिन वह तो मात्र परीक्षा थी। धन्य हो गए वे पंच प्यारे, जो अपने गुरु के आह्वान पर प्राणदान हेतु प्रस्तुत हो गए थे। धनुर्विद्या का महारथी एकलव्य गुरुदक्षिणा में अँगूठा न देता तो वह आज तक गुरुभक्ति के आदर्श के रूप में कैसे जाना जाता? धनुर्विद्या से भी अधिक थी उसकी गुरुभक्ति, जिसकी परीक्षा लेकर गुरु द्रोणाचार्य जी ने उसे अक्षुण्ण कीर्ति प्रदान कर दी।

हमारे शिष्यत्व की कसौटी

परम पूज्य गुरुदेव अपने शिष्य, सहयोगी, समर्थक और मानसपुत्रों के जीवन के उत्कर्ष के लिए अपने तप का एक अंश बराबर लगाते रहे और लगा रहे हैं। उन्होंने किसी जाति, धर्म, सम्प्रदाय या राष्ट्र से न तो सीधे संघर्ष की बात कही और न कभी कोई ऐसा आन्दोलन ही किया। वे तो अपने क्रान्तिकारी विचारों के माध्यम से हर व्यक्ति के उत्कर्ष के लिए प्रयत्नशील रहे। अपने सद्विचारों के प्रभाव से उनके जीवन को सद्गुण एवं सत्संस्कारों की अभिवृद्धि करते रहे। उन्होंने विश्व व्यवस्था को बदलने के लिए भी अपनी तपशक्ति के प्रभाव से राष्ट्राध्यक्षों और समाज के मूर्धन्यों के विचारों को नियंत्रित करने एवं सही दिशा देने की बात कही है।

विचार क्रान्ति ही युग परिवर्तन का आधार है। पूज्य गुरुदेव ने अपने हर शिष्य, सहयोगी, समर्थक, अनुयायी से एक ही बात कही है, वह है ''हमारे विचारों को घर-घर पहुँचा दीजिए।'' यह हमारी अग्नि परीक्षा है कि हम अपने शिष्यत्व को कितना सार्थक करते हैं, अपने गुरुदेव की बात को कितना महत्त्व दे पाते हैं, मानते हैं।

पूज्य गुरुदेव के विचार क्रान्ति अभियान में सच्चे सहयोगी बनना समय की माँग ही नहीं, हमारे जीवन का परम सौभाग्य है। उन्होंने लिखा है :-

''इन दिनों नवनिर्माण का प्रयोजन भगवान की प्रेरणा और उनके मार्गदर्शन में चल रहा है। उसे एक तीव्र सरिता का प्रवाह मानकर चलना चाहिए, जिसकी धारा का आश्रय पकड़ लेने के बाद कोई कहीं से कहीं पहुँच सकता है। तूफान के साथ उड़ने वाले पत्ते सहज ही आसमान चूमने लगते हैं। ...'नव निर्माण' महाकाल की योजना एवं प्रेरणा है। उसका विस्तार तो उतना होना ही है, जितना कि उसके सूत्र-संचालक ने निर्धारित कर रखी है।'' वाङ्मय 29/5.12

परमात्मा ने आत्मिक उत्कर्ष के जिस दिव्य प्रयोजन के लिए हमें धरती पर भेजा है, उसकी सिद्धि के सर्वोत्तम सुयोग की उपेक्षा करने में समझदारी नहीं है। हमारे गुरुदेव ने अपने मार्गदर्शक के आदेश पर अपने जीवन का क्षण-क्षण और सामर्थ्य का कण-कण समर्पित कर दिया। हम उनके सच्चे शिष्य और अनुयायी हैं तो हमें भी अपने गुरु का कथन मानकर अभीष्ट प्रयोजन में जुट जाना चाहिए।

परम पूज्य गुरुदेव हमसे क्या चाहते हैं। उन्होंने अपने बच्चों को आत्मिक उन्नति के लिए उपासना, साधना, आराधना का विधान बताया और लोकमंगल के लिए सदैव दो चीजों की ही माँग की, **1.समयदान और 2.अंशदान।** यह दोनों ही वस्तुएँ उन्होंने विचार क्रान्ति के महान प्रयोजन को पूरा करने के लिए माँगी हैं। युग परिवर्तन के अभीष्ट लक्ष्य को पूरा करने के लिए युगशक्ति गायत्री एवं यज्ञ के दिव्य प्रवाह को जन-जन तक पहुँचा देना तथा 'मानव में देवत्व और धरती पर स्वर्ग' के अवतरण के लिए परिष्कृत विचारों के सहारे लोगों की मनःस्थिति को उत्कृष्ट बनाना; यही युग निर्माण आन्दोलन के प्रमुख कार्य हैं। युग निर्माण आन्दोलन से जुड़े हर व्यक्ति को इन्हें जरूर पूरा करना चाहिए। यही उनके शिष्यत्व की सच्ची कसौटी है।

साहसी कदम बढ़ाने ही होंगे

परम पूज्य गुरुदेव ने जन-जन तक सत्साहित्य ही नहीं, सद्विचारों को पहुँचाने का आह्वान किया है। यह कार्य सघन जनसंपर्क से ही पूरा हो सकता है। आज के मोबाइल-इण्टरनेट के जमाने में तो यह कार्य और भी कठिन हो गया है। इनसे लोगों तक विचार पहुँचाने में तो आसानी हुई, लेकिन उन विचारों को जीवन में उतारने का उनके पास न तो साहस है, न समय। साहस जगाने के लिए जनसंपर्क बढ़ाना पहले से कहीं ज्यादा जरूरी हो गया है। प्रत्यक्ष मिलने पर संवेदना-सद्भावना से युक्त प्रेरणाएँ ही लोगों पर बेहतर प्रभाव डाल सकेंगी। परिणाम की चिन्ता को भगवद्अर्पण कर कर्त्तव्यपथ पर साहसपूर्वक अग्रसर हुआ जाए तो सत्परिणाम सुनिश्चित हैं, किसी को सफलता में संदेह नहीं करना चाहिए। सद्गुरु के प्रति समर्पण हो तो कार्य इतना कठिन भी नहीं है।

अपने मिशन की पत्रिकाएँ जनसंपर्क बढ़ाने तथा लोगों तक सतत सद्विचार पहुँचाने का सर्वोत्तम साधन हैं। प्रस्तुत समय पत्रिकाओं की सदस्यता का अभियान चलाने का है। इस संदर्भ में पूज्य गुरुदेव के निर्देश हैं, ''अखण्ड ज्योति परिजनों की संख्या बढ़ने का क्रम रुकना नहीं चाहिए। उसे संबद्धजनों को रुकने भी नहीं देना चाहिए। इस दिशा में सीमित लक्ष्य यह है कि एक से पाँच, पाँच से पच्चीस बनने वाली गुणन-अभिवर्धन प्रक्रिया में कहीं कोई व्यवधान अड़ना नहीं चाहिए।'' वाङ्मय 29/4.59

व्यवधान और कहीं नहीं, मात्र हमारे संकल्प और साहस की कमी का है। जो भी इस पुनीत कार्य में आगे बढ़ा, उसे समाज का भरपूर प्यार और सम्मान ही मिला है। परिजनों की श्रद्धा और कर्त्तव्यनिष्ठा ही लोगों को ज्यादा प्रभावित करती है। पुस्तकों का अपना महत्त्व है, लेकिन जिस श्रद्धा के साथ गायत्री परिवार लोकमंगल के कार्यों में जुटा है उससे उन पुस्तकों का महत्त्व कई गुना बढ़ जाता है।

एक अड़चन व्यक्ति का संकोच है। समाज क्या कहेगा, लोग क्या समझेंगे, जैसे विचार बढ़ते कदमों को पीछे खींचने लगते हैं। आगे कदम बढ़ाने से पहले ही सफलता के प्रति आशंकाएँ घेरने लगती हैं। इस संकोच और शंका को छोड़कर अपने गुरु और अपने भगवान के प्रति दृढ़ विश्वास जगाने की आवश्यकता है। रीछ-वानरों ने अतुलित बलशाली राक्षसों से लोहा लेने का साहस भगवान राम पर विश्वास करके ही किया था। यही आज हमें भी करना चाहिए।

बात प्रज्ञा अभियान की

जब परम पूज्य गुरुदेव अखण्ड ज्योति का उल्लेख करते हैं तो उसका तात्पर्य मिशन की सभी पत्रिकाओं से होता है। प्रज्ञा अभियान विचार क्रान्ति अभियान में बड़ी भूमिका निभा सकता है। (देखें पृष्ठ-1)। मिशन की गतिविधियों से निरंतर जुड़े रहने के लिए हर व्यक्ति को प्रज्ञा अभियान अवश्य पढ़ना चाहिए और हर उस व्यक्ति तक इसे पहुँचाना चाहिए, जिसे हम इस दैवी मिशन के साथ जोड़ना चाहते हैं। ***

महाराष्ट्र में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान का शासकीय योजना के अन्तर्गत व्यापक विस्तार हुआ

'माता सुरक्षित तो घर सुरक्षित' कार्यक्रम के अन्तर्गत मुम्बई, नागपुर, जलगाँव उपजोन में दो माह तक प्रशिक्षण श्रृंखला चली। इसमें हजारों चिकित्सक, चिकित्सा अधिकारी, सहायिकाओं, आशा सेविका और गर्भवती बहिनों को गर्भ विज्ञान और आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान का प्रशिक्षण दिया गया।

ठाणे, मुम्बई में सेविकाओं, सहायिकाओं और गर्भवती महिलाओं को गर्भ विज्ञान की जानकारी देतीं प्रान्तीय समन्वयक श्रीमती उमा शर्मा

महाराष्ट्र शासन द्वारा विगत नवरात्र से 'माता सुरक्षित तो घर सुरक्षित' कार्यक्रम आरंभ किया गया, जो दो माह तक चला। शासन ने गायत्री परिवार द्वारा संचालित गर्भ संस्कार शिविर का कार्यक्रम भी इसमें शामिल किया था। प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, महानगर पालिका, ग्रामीण चिकित्सालय आदि में डॉक्टर्स द्वारा और आँगनवाड़ी केन्द्रों में सुपरवाइजर्स द्वारा गायत्री परिवार के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया। मुंबई, नागपुर और जलगाँव जोन में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान में कार्यरत बहिनों ने पहुँचकर कार्यक्रमों को प्रशासन की अपेक्षाओं के अनुरूप शानदार सफलता प्रदान की। आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की प्रान्तीय समन्वयक श्रीमती उमा शर्मा की हर क्षेत्र में प्रमुख भूमिका रही।

मुंबई उपजोन में जयश्री शिम्पी तथा आरती साहू ने तथा नीलम सोनी ने बदलापुर, उल्हासनगर, विरार, काजूवाड़ी, ठाणे के प्राथमिक आरोग्य केंद्रों में कार्यक्रम सम्पन्न कराए। गर्भवती बहिनों के साथ उन केन्द्रों के अधिकारी क्रमशः डॉ. प्रशांत, डॉ. अश्विनी, डॉ. मनीषा पवार और समस्त स्टाफ की उपस्थिति में ये कार्यक्रम आयोजित हुए, उमा शर्मा ने मार्गदर्शन दिया।

ठाणे के काजू वाड़ी तथा अंबिका नगर की सुपरवाइजर मनीषा विचारे व ज्योति सांख्य के सहयोग से एकात्मिक बाल विकास अधिकारी अशोक बागुल, डॉ. मनीषा पंवार की उपस्थिति में शिविर सम्पन्न हुए। मुलुंड के कॉर्पोरे6शन हॉस्पिटल में हुए कार्यक्रम में डॉ. अमृता जगताप ने गर्भ विज्ञान एवं संगीता ने आहार, योगासन बताए। नायगाँव तथा पालघर में भी अत्यंत सफल कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

नारी सशक्तीकरण वर्ष में बहिनों के प्रान्तीय संगठन की शानदार सक्रियता

नागपुर उपजोन के अन्तर्गत नागपुर जिले में सुषमा अग्रवाल ने ग्राम खापरी की जिला परिषद सदस्य मेघा मानकर की उपस्थिति में सेविकाओं तथा गर्भवती बहिनों को गर्भ विज्ञान की जानकारी दी। नागपुर ग्रामीण के गुमगाँव, परसोडी गाँव तथा सावरगाँव में कार्यक्रम हुए। सुषमा अग्रवाल, सरोज गौर, अरुंधती मिश्रा ने इन्हें सम्पन्न कराते हुए गर्भ विज्ञान आदि की जानकारी दी। भंडारा जिले में इंदु पटले ने (तहसील तुमसर) तथा नीता सक्करवार (भंडारा) ने और जिला गोंदिया के आमगाँव में कार्यक्रम सम्पन्न कराए।

जलगाँव उपजोन में वैशाली चौधरी के मार्गदर्शन में गायत्री शक्तिपीठ भुसावल के द्वारा कई कार्यक्रम हुए, जिनमें 250 आँगनवाड़ी सेविकाओं को डॉ. गीतांजलि भोले और सुशीला पंडाग्रे ने गर्भ विज्ञान का प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण में बाल विकास अधिकारी भी उपस्थित रहीं।

यावल तहसील में वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में अनेक गर्भवती बहिनों ने गर्भ संस्कार समारोह का लाभ लिया, सुरेखा काटकर एवं साथी बहिनों ने उनका मार्गदर्शन किया। औरंगाबाद के पाचोड तहसील में संतोष फाटे द्वारा आयोजित कार्यक्रम में राजेश टाँक ने गर्भ विज्ञान समझाते हुए गर्भ संस्कार सम्पन्न कराया।

धुले के नगरपालिका आरोग्य केन्द्र में सुरेखा अग्रवाल, शोभा दयाल द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न कराए गए। शिरपुर तहसील में डॉ. योगेश पाटिल के सहयोग से रेखा भगत ने करीब 400 आँगनवाड़ी सेविकाओं का मार्गदर्शन किया।

गुरु चेतना के आशीर्वाद से सभी कार्यक्रमों की विशेषता यह रही कि सभी अधिकारियों ने गायत्री परिवार के आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान को बहुत सराहा तथा अपने यहाँ बार-बार आने के लिए निमंत्रित किया है। गर्भ संस्कार के मॉड्यूलर कोर्स का प्रशिक्षण पाकर हजारों प्राथमिक आरोग्य केन्द्रों से जुड़े चिकित्सक, अधिकारी और आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ता बहिनें अपने क्षेत्र के परिचितों में इस संस्कार का प्रचार करने और संस्कार कराने लगी हैं।

सावरगाँव, नरखेड़, जिला नागपुर के प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र में चल रहा गर्भ विज्ञान का प्रशिक्षण

गर्भ संस्कार अभियान के लिए समर्पित दम्पती

भरतपुर। राजस्थान : गायत्री शक्तिपीठ भरतपुर से जुड़े दम्पती श्री जगदीश प्रसाद अरोड़ा एवं श्रीमती पुष्पा अरोड़ा ने विगत छः माह में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान को गति देने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। उन्होंने भरतपुर शहर और आसपास के क्षेत्रों में संस्कारवान संतान प्राप्ति हेतु बहिनों में जागरूकता बढ़ाने के लिए अथक परिश्रम किया। उन्होंने 16 मई से 15 नवम्बर 2022 तक के छः माह में भरतपुर के 28 आँगनबाड़ी केन्द्रों पर जाकर 440 गर्भवती महिलाओं के पुंसवन संस्कार सम्पन्न कराए हैं। इनमें 2 ईसाई, 4 मुस्लिम और 8 सिक्ख बहिनें भी शामिल थीं। जहाँ भी कार्यक्रम होते हैं, वहाँ वैदिक संस्कार के साथ बहिनों को गर्भ विज्ञान और गर्भकाल में आहार, विहार, विचार, व्यवहार की विस्तार से जानकारी दी जाती है।

छः माह में 28 आँगनबाड़ी केन्द्रों पर जाकर 440 गर्भवती महिलाओं के पुंसवन संस्कार सम्पन्न कराए।

लगभग 68 वर्षीय श्री जगदीश प्रसाद अरोड़ा 1994 से गायत्री परिवार के लिए समर्पित हैं। सन् 2014 में राजकीय महाविद्यालय, भरतपुर से सेवानिवृत्ति के पश्चात् अपना सारा समय मिशन के कार्यों में ही लगाते हैं। बहिन श्रीमती पुष्पा अरोड़ा भी अध्यापक के पद से सेवानिवृत्त है।

देव प्रबोधनी एकादशी से दिया, मुम्बई ने मनाया तुलसी वितरण सप्ताह

विभिन्न संस्थानों में जाकर हजारों गणमान्यों को भेंट की गई तुलसी की पौध और स्वास्थ्य सम्बन्धी साहित्य

मुम्बई। महाराष्ट्र

अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के युवा संगठन 'डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन (DIYA) ने देव प्रबोधनी एकादशी 5 नवम्बर से तुलसी वितरण सप्ताह का शुभारंभ किया। उल्लेखनीय है कि देव प्रबोधनी एकादशी पर तुलसी विवाह का विशेष महत्त्व है। उस दिन तुलसी के चमत्कारिक गुणों का स्मरण करते हुए आस्था संवर्धन और स्वास्थ्य के लिए उसे जीवन व्यवहार में अपनाने की प्रेरणा दी जाती है।

5 से 14 नवम्बर की तिथियों में लगभग बीस संस्थानों में तुलसी वितरण के कार्यक्रम आयोजित हुए। इनमें तुलसी के आध्यात्मिक एवं स्वास्थ्यपरक गुणों की जानकारी दी गई, तुलसी के चमत्कारिक गुण जैसी पुस्तकें भी वितरित की गईं तथा सभी के उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घ आयुष्य की सामूहिक प्रार्थना की गई। सैकड़ों लोगों ने प्रेरणा पाई। सुचिता शेट्टी, गायत्री नायक, श्रीमती अमानी शेट्टी, राजेश शेट्टी, श्रीमती संगीता तिवारी आदि दिया संगठन से जुड़े कई कार्यकर्त्ताओं ने इस अभियान की सफलता के लिए अथक परिश्रम किया।

दिया, मुम्बई सन् 2014 से ही समय-समय पर तुलसी विवाह, तुलसी उत्सव, तुलसी वृंदावन की स्थापना, तुलसी वाटिका, तुलसी टैरेस वृक्षारोपण, तुलसी वन जैसे विभिन्न तुलसी वितरण कार्यक्रमों को आयोजित करता रहा है। लोगों को जन्मदिन, विवाहदिन जैसे शुभ दिनों के अवसर पर उपहार स्वरूप 'तुलसी की पौध' देने की प्रेरणा दी जाती है।

टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, के.ई.एम. हॉस्पिटल, वीर सावरकर हॉस्पिटल में तुलसी वितरण-पूजन

जहाँ कार्यक्रम हुए वे संस्थान हैं -

- टाटा मेमोरियल अस्पताल, परेल
- प्राइमेटल्स टेक्नोलॉजीज़ प्रा. लि., तुर्भे नवी मुंबई
- भायखला स्थित मुंबई में फायर स्टेशन का प्रधान कार्यालय
- बेस्ट डिपो, मुलुंड
- गुरु नानक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज और गुरु नानक खालसा कॉलेज माटुंगा
- मुलुंड पश्चिम पुलिस स्टेशन
- डॉ. आर.एन. कूपर अस्पताल, जुहू
- मणिबेन नानावटी महिला कॉलेज, विले पार्ले
- विद्यानिधि उपनगर शिक्षण मंडल, जुहू
- शिक्षा विभाग, जोगेश्वरी
- टी वार्ड बीएमसी कार्यालय मुलुंड में कानूनी, कर, उद्यान स्वास्थ्य विभाग और अग्रवाल अस्पताल
- मुलुंड प्रसूति गृह
- लोकमान्य तिलक म्यूनिसिपल हॉस्पिटल, सायन
- कैंसर सर्जरी विभाग और जीआई और एचपीबी सर्जिकल ऑन्कोलॉजी, टाटा मेमोरियल अस्पताल
- केईएम अस्पताल, परेल
- वीर सावरकर म्यूनिसिपल हॉस्पिटल मुलुंड ईस्ट
- वी. जी. वाजे कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स (ऑटोनॉमस), मुलुंड
- बंट्स संघ महिला विंग, मुलुंड द्वारा आयोजित चिकित्सा शिविर में
- गोजू रयू शोबू काई कराटे दो इंडिया, ठाकुरद्वारा
- जिला अस्पताल भंडारा (महाराष्ट्र)

छोटा कदम, बड़ा परिणाम

मात्र 8 माह में 1,043 पेड़ लगाने जैसा पुण्यदायी काम

न्यूजर्सी। अमेरिका

आज दुनिया में जितने भौतिक संकट दिखाई देते हैं, पर्यावरण संकट उन सबमें सबसे अधिक घातक और दूरगामी असर डालने वाला है। यदि मानवता आज नहीं चेती तो आने वाले दिनों में प्रकृति का जो कोप हमें झेलना पड़ेगा, उसकी कल्पना भी कठिन है। पानी के लिए तरसती दुनिया, आग-सी गरमी से झुलसती दुनिया, मौसम की अनिश्चितताओं के बीच खाद्यान्न संकट, बाढ़-तूफान, सूखे जैसे खतरों से बेहाल दुनिया और पर्यावरण प्रदूषण के कारण असाध्य रोगों की भरमार जैसे अनेक संकट ऐसे हैं जिनकी कल्पना भी रोंगटे खड़े कर देती है। सच पूछा जाए तो आने वाले कुछ दशक मानवता के अस्तित्व के लिए ही चुनौती लेकर आ रहे हैं।

इन प्रतिकूलताओं के बीच एक-दूसरे के दोष देखने में समय गँवाने की बजाय यह सुनिश्चित करना है कि हम पर्यावरण की रक्षा के लिए जो कर सकते हैं वह कर रहे हैं या नहीं। हमारे छोटे-छोटे से प्रयास भी बड़ा योगदान दे सकते हैं, जिनकी बानगी गायत्री चेतना केन्द्र, न्यूजर्सी ने दी है। वैसे तो घर की छत पर सोलर पैनल लगाने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है, लेकिन गायत्री चेतना केन्द्र न्यूजर्सी के प्रबंधकों ने केन्द्र की छत पर लगाए गए सोलर पैनल के लाभ के आँकड़े भेजे हैं। यह आँकड़े इस कार्य के प्रति सभी का उत्साह बढ़ाने वाले हैं।

मात्र आठ माह में

- 62,688 कि.ग्रा. कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन बचाया।
- 89.2 मेगा वॉट बिजली का उत्पादन हुआ।
- 1,043 पेड़ लगाने जैसा पुण्य कार्य है यह।

इससे हुई आर्थिक बचत तो एक अलग बात है।

सांस्कृतिक चेतना का विस्तार करते दीप महायज्ञ

गंगातट पर स्वतंत्रता सेनानी और महापुरुषों को श्रद्धाञ्जलि

वाराणसी में राजघाट एवं मालवीय ब्रिज के नीचे के घाट पर 7400 दीप जलाकर दिया नवचेतना जागरण का संदेश

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

वाराणसी में हर वर्ष देव दीपावली महोत्सव मनाया जाता है। कई गंगाघाटों पर लाखों की संख्या में दीप जलाए जाते हैं। यह कार्यक्रम स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों एवं महापुरुषों को समर्पित होता है। इस वर्ष प्रशासन ने गायत्री परिवार वाराणसी को राज घाट और मालवीय ब्रिज के बीच नवीन घाट पर दीप प्रज्वलन की जिम्मेदारी दी थी।

गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट, वाराणसी ने पूरी श्रद्धा-निष्ठा के साथ अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। निर्धारित घाट पर परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं भगवान धन्वंतरि जी के चित्र के समक्ष 7400 दीप प्रज्वलित किए। उन्हें कन्याओं द्वारा 75 वाँ आजादी का अमृत महोत्सव, स्वस्तिक, ॐ, जय श्रीराम, देव दीपावली महोत्सव, अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है जैसे संदेशों के आकार में सजाया गया था। कार्यक्रम को दीप महायज्ञ का स्वरूप देते हुए देवशक्तियों की आराधना की गई और गायत्री महामंत्र, महामृत्युंजय मंत्र आदि से भावनात्मक आहुतियाँ दी गईं।

देव दिवाली दीपोत्सव में दीपयज्ञ

श्री रमन कुमार श्रीवास्तव के अनुसार यू.पी. कॉलेज महिला मंडल, प्रज्ञा योग पीठ, बड़ागाँव, कानूडीह,चाँदमारी, दानुपुर, तड़िया महिला मंडल, सोना तालाब महिला मंडल, कोनिया महिला मंडल के साथ कई प्रज्ञा मंडलों के सहयोग से पूरा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसने हजारों लोगों की आस्था का पोषण किया।

11000 दीप महायज्ञ से युगचेतना के विस्तार में मिली शानदार सफलता

गाँधीनगर, पूर्वी दिल्ली

गाँधीनगर एशिया में तैयार कपड़ों का सबसे बड़ा बाजार कहा जाता है। यहाँ के व्यापारियों की आस्था भी सराहनीय है, जो वर्ष में लगभग 10 बार विभिन्न कथाओं के बड़े आयोजन करते हैं। इस वर्ष पूर्वी दिल्ली शाखा द्वारा चलाए जा रहे कॉलोनी-कॉलोनी पंच कुण्डीय यज्ञ के प्रभाव और गायत्री परिवार के संगठित प्रयासों से युगऋषि का संदेश प्रसारित करने का अवसर भी मिला। गायत्री परिवार की पूर्वी दिल्ली शाखा द्वारा डी.ए.वी. स्कूल के मैदान में चल रही 5 दिवसीय हनुमत कथा के अन्तर्गत 25 नवम्बर की शाम को 11000 दीपकों का भव्य दीपयज्ञ रखा गया।

10 कार्यक्रम निर्धारित हुए

पूर्वी दिल्ली में गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे कॉलोनी-कॉलोनी पंच कुण्डीय यज्ञ अभियान के लगभग 10 कार्यक्रम इस दीप महायज्ञ में निर्धारित हो गए।

लोग गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं के समर्पण भाव से बेहद प्रभावित हुए, जिन्होंने मात्र 4 घंटों में ही 11000 दीपकों की रंगोली के साथ तैयारी कर दी थी। एरिया के एस.एच.ओ. भी साहित्य स्टॉल पर आए, अपनी रुचि का साहित्य और स्टिकर्स खरीदे।

दीपयज्ञ में 3000 श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम ने नवम्बर 2019 में इसी मैदान में हुए 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ की दिव्यता की याद दिला दी।

गाँधीनगर और पूर्वी दिल्ली की सभी शाखाओं के सहयोग से गायत्री चेतना केंद्र, नोएडा के व्यवस्थापक श्री बालरूप शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति और पूर्वी जोन के समन्वयक सज्जन शर्मा के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

श्रद्धा-सक्रियता का आदर्श

मन की प्रचण्ड संकल्प शक्ति से हारी शारीरिक दुर्बलता

हर दिन एक नए घर में करते हैं दीपयज्ञ

नदबई, भरतपुर। राजस्थान

अत्यंत विनम्र, संकल्पनिष्ठ प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री शिवराम शर्मा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मीरा शर्मा के साथ पिछले चार माह से भी अधिक समय से लगभग प्रतिदिन सायं नदबई के किसी न किसी घर में दीपयज्ञ कराते हैं। वे जुलाई से अब तक 108 से अधिक घरों में दीपयज्ञ करा चुके हैं। बात यज्ञ की संख्या की नहीं, उनका संकल्प, सक्रियता, मिशन के प्रति लगन और लोकमानस को बदलने की प्रबल आकांक्षा ही अपने आप में उनकी विलक्षण विभूति है। उनका जीवन ही अपने आप में उच्च कोटि की प्रेरणा है।

श्रीराम सेतु का निर्माण तो बलशाली वानरों के पुरुषार्थ से हुआ था, लेकिन नन्हीं गिलहरी की भक्ति अतुलनीय थी। पेशे से शिक्षक रहे श्री शिवराम शर्मा जी की कथा-गाथा कुछ ऐसी ही है। शुरू से ही अत्यंत दुर्बल स्वास्थ्य और कृषकाय रहे। आहार में सूखी रोटी और सब्जी के रूप में उबला हुआ नमकीन घीया (लौकी) के अलावा वे न तो कोई आहार ले सकते हैं और न ही कोई ऐलोपैथिक दवाई। पाँव का एक्सीडेण्ट और ऑपरेशन हुआ तो भी बिना एण्टीबायोटिक या अन्य दवाइयों के ही ठीक हुए। सर्दी-गर्मी के हल्के-से थपेड़े भी उन्हें अस्वस्थ कर देते हैं। लेकिन गुरुकार्य के प्रति लगन इतनी कि मिशन की पत्रिकाओं के नियमित वितरण से लेकर कार्यक्रमों में उपस्थिति तक इतना कार्य करते हैं कि उनकी सक्रियता स्वस्थ और समर्थों के लिए भी प्रेरणादायी है।

श्री शिवराम शर्मा एवं श्रीमती मीरा शर्मा दीपयज्ञ का संचालन करते हुए

61 वर्षीय श्री शिवराम जी ने अपना जीवन युगऋषि के बताये आदर्शों के अनुरूप ही ढाला है। अपने शैक्षिक सेवाकाल में पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ विद्यार्थियों की हर संभव सहायता करते रहे। कई तरह की परेशानियाँ झेलीं, लेकिन अनेक पारिवारिक दबावों के बावजूद बच्चों के विवाह एवं परिवारी जनों के अंतिम संस्कार में कुरीतियों का कभी समर्थन नहीं किया। सदैव दूसरों में सद्गुणों के दर्शन और हँसते-हँसते सम्मान एवं प्रोत्साहन देने की उनकी ऐसी विशेषता है, जिसका प्रभाव साथी-सहयोगियों पर पड़े बिना रहता ही नहीं। दैव योग से धर्मपत्नी और बच्चों का भी उन्हें भरपूर समर्थन और सहयोग मिलता रहा।

शक्तिपीठ को एक लाख का अनुदान दिया

श्री शिवराम जी निर्विवाद रूप से स्थानीय सभी कार्यकर्त्ताओं के प्रिय हैं। विगत तीन माह में दीपयज्ञों से एक लाख रुपये से अधिक का अनुदान उन्हें प्राप्त हुआ, जिसे उन्होंने गायत्री शक्तिपीठ को समर्पित कर दिया।

मत्स्य महोत्सव की शान था भव्य 5100 दीपयज्ञ

नगरवासी एवं पर्यटकों ने खूब सराहा

दीपों से प्रेरक संदेश उकेरते परिजन और प्रथम दीप जलाते जिलाधिकारी

अलवर। राजस्थान

'मत्स्य महोत्सव अलवर 2022' में भागीदारी करते हुए गायत्री परिवार अलवर द्वारा शहर के मध्य स्थित ऐतिहासिक सागर जलाशय के तट पर 5100 दीपक प्रज्वलित कर भव्य दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जिला कलेक्टर अलवर श्री जितेंद्र कुमार सोनी एवं अलवर की पुलिस अधीक्षक श्रीमती तेजस्विनी गौतम ने भी कई अन्य अधिकारियों के साथ दीप प्रज्वलित कर दीपयज्ञ में भाग लिया।

अलवर में प्रशासन द्वारा हर वर्ष पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'मत्स्य महोत्सव' का आयोजन किया जाता है। इसमें भारतीय कला और संस्कृति का भव्य प्रदर्शन होता है। गायत्री परिवार भी प्रत्येक वर्ष इस महोत्सव में भाग लेते हुए 'गायत्री और यज्ञ' के दर्शन को जन-जन तक पहुँचाता रहा है। कोरोना संक्रमण काल के बाद यह पहला आयोजन था, जिसे दर्शकों ने बहुत सराहा।

दिनांक 25 नवम्बर की सायं आयोजित इस कार्यक्रम की सफलता के लिए अलवर शहर के सैकड़ों परिजनों ने सम्मिलित होकर समय एवं सहयोग प्रदान किया। सागर के चारों ओर विभिन्न आकर्षक एवं संदेशात्मक आकृतियों में दीप सजाए और यज्ञ के कर्मकाण्ड के साथ प्रज्वलित किए गए। श्री मुरारी लाल शर्मा एवं श्रीमती ज्ञान देवी शर्मा की टोली ने यज्ञ संचालन करते हुए मिशन का संदेश दिया। दीपयज्ञ की क्रियाओं में श्री चरण सिंह चौधरी ने जिला कलेक्टर आदि अधिकारियों का सहयोग किया।

गायत्री परिवार का नशामुक्त मध्यप्रदेश अभियान

शिक्षण संस्थानों में आयोजित की गईं वृहद् कार्यशालाएँ

हाईस्कूल सिंगावदा में
देवास। मध्य प्रदेश

'नशामुक्त भारत' के क्रान्तिकारी संकल्प के साथ देवास शाखा निरंतर स्कूल, कॉलेज और ग्रामीण क्षेत्रों में वृहद कार्यक्रम तथा जनजागरण रैलियों का आयोजन कर रही है। श्री विक्रम सिंह चौधरी के अनुसार इस कड़ी में 129वाँ वृहद सार्वजनिक आयोजन 'नशामुक्ति सेमिनार और व्यक्तित्व विकास कार्यशाला' के रूप में हाईस्कूल सिंगावदा में सम्पन्न हुआ। नशामुक्ति के हृदयस्पर्शी गीतों के साथ इसका शुभारंभ हुआ। 'बीड़ी पीकर खाँस रहा है, मौत के आगे नाच रहा है...।' जैसे नारे पूरे परिसर में नशे के विरुद्ध विद्रोह के भाव जगाते रहे।

प्रमोद निहाले, लक्ष्मण पटेल और बाबूलाल सोलंकी ने विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणाम समझाते हुए कहा कि भारत में सबसे अधिक मौतें और दुराचार की घटनाएँ नशे के कारण ही होती हैं। स्वास्थ्य और आर्थिक हानि के आँकड़े आँखें खोल देने वाले थे। गायत्री परिवार के सदस्यों ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में यदि नशे की लत लग जाए तो उसका जीवन ही बर्बाद हो जाता है।

नारायण विद्या मंदिर क्रमांक-1 के विद्यार्थियों को सम्बोधित करती गायत्री परिवार की टोली

सभी विद्यार्थी कार्यशाला से बहुत प्रभावित हुए। सबने बड़े उत्साह के साथ स्वयं नशामुक्त जीवन जीने के और अपने परिजनों को भी नशामुक्ति के लिए प्रेरित करने के संकल्प लिए। प्राचार्य अनिल सोलंकी सहित सभी शिक्षकों ने इस प्रकार की कार्यशालाओं को बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए बहुत उपयोगी मानते हुए गायत्री परिवार की टीम का आभार व्यक्त किया।

नारायण विद्या मंदिर क्रमांक-1 में

इससे पूर्व 128वाँ व्यक्तित्व विकास एवं नशामुक्ति सेमिनार नारायण विद्या मंदिर क्रमांक-1 में सम्पन्न हुआ। गायत्री शक्तिपीठ के युवा जिला समन्वयक प्रमोद निहाले, देवी शंकर तिवारी, देवकरण कुमावत, रमेश नागर, लक्ष्मण पटेल आदि ने इस सेमीनार को सम्बोधित किया। उन्होंने विद्यार्थियों को समझाया कि यह उम्र भविष्य बनाने की है। समझदारी और ईमानदारी के साथ जिया गया जीवन ही श्रेयस्कर होता है। उन्होंने बताया कि नशा करने वाले लोगों की कड़ी मेहनत की आधी कमाई नशे पर बर्बाद हो जाती है। क्षणिक नासमझी के कारण उन्हें जीवनभर कष्ट और परेशानियों से भरा जीवन जीना पड़ता है।

गायत्री परिवार की प्रेरणा से इस सेमीनार में सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों ने आजीवन नशामुक्त रहने की शपथ ली। बच्चों को अपने मित्रों और परिवारी जनों को भी नशे की लत से दूर करने की प्रेरणा दी गई।

श्री लक्ष्मण पटेल द्वारा गाए गए नशा मुक्ति गीत 'नशा ना करना, मान लो कहना, होगी बड़ी खराबी ...' को बच्चों ने बहुत पसंद किया और गाने में साथ दिया।

साधन सुख नहीं दे सकते और धन चैन नहीं खरीद सकता। सुख, शान्ति, संतोष तो व्यक्ति की अपनी मनःस्थिति पर निर्भर होते हैं।

परिवर्तन की सौंधी सुगंध

पांचाल समाज ने आयोजित किया आदर्श सामूहिक विवाह समारोह

भरतपुर। राजस्थान : भरतपुर शाखा ने देव प्रबोधनी एकादशी-4 नवम्बर के दिन भरतपुर में पांचाल समाज महासभा के द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह कार्यक्रम में दस जोड़ों का विवाह संस्कार सम्पन्न कराया। यह विवाह संस्कार समारोह गायत्री परिवार द्वारा दी जा रही नेग, दहेज और फिजूलखर्ची से परहेज की प्रेरणाओं के अनुरूप ही आयोजित किया गया था। दोनों पक्षों के न्यूनतम परिजन समारोह में शामिल हुए।

कार्यक्रम में आचार्य एवं उपाचार्य के साथ-साथ अन्य व्यवस्थाएँ गायत्री परिजनों ने ही सँभालीं। वर-वधू को गायत्री साधना से गृहस्थ आश्रम एवं दाम्पत्य जीवन को सुखमय कैसे बनाया जा सकता है, इसकी प्रेरणा भी दी गई।

विवाह संस्कार सम्पन्न कराती गायत्री परिवार कुम्हेर की टोली

माँ की मृत्यु पर मृत्युभोज न देने का प्रगतिशील कदम

सौंसर, छिन्दवाड़ा। मध्य प्रदेश

राष्ट्रीय भर्तृहरि विक्रम भोज पुरस्कार समिति के सम्मानीय सदस्य और गायत्री परिवार ट्रस्ट सौंसर के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री किशोर किनकर ने पूज्य गुरुदेव के विचारों के अनुरूप अपनी माता मुक्ताबाई की मृत्यु पर मृत्यु भोज न देकर अपने समाज के समक्ष एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। उनके इस साहसिक कदम का सभी ने स्वागत किया। उनके इस निर्णय में उनके परिवारीजनों और रिश्तेदारों की भी सहर्ष सहमति रही।

छात्रवृत्ति आरम्भ की

16 मई 2015 को अपनी बेटी की मृत्यु पर भी उन्होंने मृत्युभोज न देकर समाज के दिव्यांग जनों के लिए छात्रवृत्ति प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया था। राष्ट्रीय भर्तृहरि विक्रम भोज पुरस्कार समिति भोपाल के प्रतिभा सम्मान समारोह में यह छात्रवृत्ति दी जाती है। उल्लेखनीय है कि उन्होंने अनेक लोगों को कुरीतियाँ छोड़कर मिशन के आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा दी है।

सिलाई सीख रही बहिनों को दे रहे हैं यज्ञ-संस्कार का प्रशिक्षण

अलवर। राजस्थान : गायत्री परिवार अलवर द्वारा जनता कॉलोनी, मुंगस्का, अलवर में निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण केंद्र चलाया जा रहा है। 13 नवम्बर 2022 से शाखा ने प्रशिक्षण लेने वाली बहिनों को समाज की कुशल पुरोहित बनाने के लिए भी पहल की है। शाखा ने निर्णय लिया है कि इन प्रशिक्षु बहिनों के लाभार्थ माह में दो बार विशेष गायत्री यज्ञ किए जाएँगे, जिसमें उन्हें यज्ञ तथा विविध संस्कार कराने का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

13 नवम्बर को प्रथम यज्ञ हुआ, जिसका संचालन श्री मोहनलाल शर्मा एवं श्रीमती आशा तिवारी ने किया। अक्षिता, प्रगति और चंचल ने भी यज्ञ के प्रशिक्षण में सहयोग किया।

सप्त आन्दोलनों को गति दे रहे हैं सेवाभावी युगसृजेता

527 साधकों ने किया लघु गायत्री अनुष्ठान

धमतरी। छत्तीसगढ़

परम पूज्य गुरुदेव ने वैश्विक वातावरण के शोधन और समाज में व्यापक परिवर्तन के लिए युगशक्ति की सामूहिक साधना का विशेष महत्त्व बताया है। विगत नवरात्र में धमतरी जिला संगठन ने इस क्रम में प्रशंसनीय प्रयोग किया। 527 गायत्री साधकों द्वारा सामूहिक रूप से लघु गायत्री अनुष्ठान किए गए। उनके द्वारा सवा करोड़ गायत्री महामंत्र का जप किया गया। जिला समन्वयक दिलीप नाग ने बताया कि इस साधना अभियान में धमतरी ब्लॉक से 287, कुरुद से 60, मगरलोड से 82 एवं भखारा से 98 साधक भाई-बहिन शामिल हुए। उन्होंने सभी का अभिनंदन करते हुए सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

स्वर्ण रेखा नदी संरक्षण एवं घाट स्वच्छता के लिए गाँव-गाँव यज्ञ-जनजागरण

राँची। झारखण्ड

गायत्री परिवार ने विगत लगभग 6 माह से झारखण्ड, बंगाल और ओडिशा से होकर गुजरने वाली स्वर्ण रेखा नदी की स्वच्छता के लिए विशेष जनजागरूकता अभियान चला रखा है। इसके अंतर्गत हर रविवार को गाँव-गाँव जाकर गायत्री यज्ञ कराए जाते हैं, लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जाता है और नदी व घाट को स्वच्छ रखने, उसके प्रति जागरूकता बढ़ाने के संकल्प गाँववासियों को दिलाए जाते हैं।

22वें सप्ताह, 6 नवम्बर को गायत्री चेतना केंद्र, बेको के द्वारा कनास ग्राम, धालभूमगढ़ में नौ कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री कामाख्या जी एवं रविशेखर जी ने इसका संचालन किया। स्थानीय नदी व घाट पर स्वच्छता अभियान भी चलाया गया। इस पुनीत कार्य में श्री गुरूदेव महतो, सुश्री श्रद्धा महतो, श्री कपिल देव, बैजू सिंह, सत्यदेव प्रसाद, दिनेश सिंह का सराहनीय सहयोग रहा।

इससे पूर्व इसी प्रकार का एक कार्यक्रम गायत्री चेतना केन्द्र, बेको के द्वारा स्वर्ण रेखा नदी के लुपुंगडीह घाट पर सम्पन्न हुआ। गौरी महतो, तापसी महतो एवं श्रद्धा महतो ने प्रकृति के अमूल्य उपहार जल के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु संकल्प दिलाए। उन्हें व्यक्तिगत रूप से जल स्त्रोतों को प्रदूषित नहीं करने एवं इस अभियान को जन-जन तक प्रसारित करने की प्रेरणा दी गई।

निजी भूमि पर महोगनी के 200 पौधे रोपे

जहानाबाद। बिहार

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद ने भगवानगंज थाना के खानपुरा गाँव में श्री गजेन्द्र कुमार की निजी भूमि पर महोगनी के 200 पौधे रोपकर अपने सतत रविवासरीय वृक्षारोपण अभियान का 77वाँ सप्ताह मनाया। इस अवसर पर गायत्री परिवार के जिला समन्वयक कुमार श्रीकांत ने जिले को हरा-भरा बनाने का अपना संकल्प दोहराया। उन्होंने समाज के सभी लोगों से अपील की कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाएँ।

ताकि बेटियाँ कोख में ही न मार दी जाएँ ...

110 गरीब कन्याओं का कन्यादान कर चुकी है पूर्व पार्षद किन्नर नीतू मौसी

भरतपुर। राजस्थान : दिल में संवेदना हो तो किसी भी स्थिति में समाज की सच्ची सेवा कर जीवन सार्थक किया जा सकता है। नगर निगम भरतपुर की पूर्व पार्षद, जो एक किन्नर है और नीतू मौसी के नाम से जानी जाती है, विगत दस वर्षों से प्रतिवर्ष अपनी ओर से गरीब जरूरतमंद लड़कियों के सामूहिक विवाह सम्पन्न करा रही है। नीतू मौसी और उसकी शिष्याओं ने इस वर्ष भरतपुर शहर के एक मैरिज होम में अलग-अलग जाति, वर्ग और धर्म की दस कन्याओं का सामूहिक विवाह कराया। एक साथ सबकी बारात पहुँची, किन्नर समाज की ओर से आरती उतारीं गई। नीतू मौसी ने सभी का कन्यादान किया।

नीतू मौसी अब तक 110 कन्याओं का विवाह करा चुकीं हैं। वे बताती हैं कि आर्थिक एवं सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग अपनी लड़कियों को कोख में ही न मार दे, इसके लिए उन्होंने यह अभियान चलाया है। वे शादी के बाद भी बहिनों को त्यौहार एवं विशेष पर्वों पर बुलाकर उनकी यथासंभव सेवा करती हैं।

निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण सेवाएँ

टाटानगर। झारखण्ड

नवयुगदल टाटानगर ने बाल दिवस के अवसर पर गायत्री ज्ञान मंदिर भालूबासा में निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण की नई सेवाएँ आरम्भ कीं। इस अवसर पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार की पूर्व छात्रा सुश्री स्मृति श्रीवास्तव ने बच्चों को जीवन में सही दिशा में आगे बढ़ने और कड़ी मेहनत कर अपना भविष्य खुद सँवारने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण सत्र में हरिजन उच्च विद्यालय, अदिवासी विद्यालय और शारदामणि उच्च विद्यालय के जरूरतमंद कुल 40 बच्चों को कम्प्यूटर की शिक्षा दी जा रही है।

बाल दिवस पर कम्प्यूटर प्रशिक्षण के लिए पंजीयन कराने पहुँचे बालक-बालिकाएँ

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

जिले के 219 विद्यालयों में आयोजित हुई परीक्षा

शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश

5 नवम्बर को गायत्री शक्तिपीठ गौहरपुरा, शाहजहाँपुर द्वारा जिले के 219 विद्यालयों में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का सफलता एवं शान्तिपूर्वक आयोजन सम्पन्न कराया गया। जिला संयोजक डॉ. एच.पी. गुप्ता ने बताया कि नगर के विद्यालयों के अलावा बंडा, खुटार, पुवायां, तिलहर, जलालाबाद, मिजार्पुर, कांट, जैतीपुर, निगोही और भावल खेड़ा के विद्यालयों में भी परीक्षा आयोजित की गई। सन इंस्टिट्यूट की प्रधानाचार्या एवं इंस्टिट्यूट के 50 छात्रों का परीक्षा के आयोजन में उल्लेखनीय सहयोग रहा।

धमतरी जिले में 14603 विद्यार्थी शामिल हुए

धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं की कड़ी मेहनत और सतत प्रयासों के परिणाम स्वरूप धमतरी जिले में कक्षा पाँचवीं से लेकर महाविद्यालय स्तर तक के 14603 छात्र-छात्राएँ इस वर्ष आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल हुए। जिले में धमतरी ब्लॉक में नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र से 6409, कुरुद एवं भखारा से 3475, मगरलोड से 2516, नगरी ब्लॉक से 1821 एवं महाविद्यालय स्तर के 382 विद्यार्थियों ने अपनी शाला के परीक्षा केन्द्रों में भाग लिया। जिले में श्री प्रदीप कुमार देवांगन के नेतृत्व में परीक्षा का संचालन कर रही समिति को पूरे जिले के सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धक सहयोग मिला।

धमतरी के विभिन्न विद्यालयों में परीक्षा देते विद्यार्थी

नौसेना बेस कारवार में कर्नल की सक्रियता

गोवा : आद्यशक्ति माँ गायत्री एवं गुरुदेव-माताजी के संरक्षण-आशीर्वाद को जन-जन तक पहुँचाकर समाज को नई रोशनी दिखा रही कर्नल अनुराधा मलिक ने नौसेना बेस कारवार में पुंसवन संस्कार सम्पन्न कराया। उन्होंने स्वयं संस्कार करा रहे दम्पती एवं उनके परिवारी जनों को गर्भ संस्कार एवं गर्भ विज्ञान की जानकारी दी। इसके अलावा उन्हें नियमित रूप से श्रेष्ठ विचार एवं उत्कृष्ट संकल्पों से जोड़े रखने के लिए शान्तिकुञ्ज के ऑनलाइन वेब स्वाध्याय तथा गर्भोत्सव समूह से भी जोड़ा, आए हुए समस्त परिजनों को उपयोगी साहित्य भेंट किया।

पुंसवन संस्कार कराती कर्नल मलिक

मनुष्य का अहंकार दूर होते ही उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए नवचेतना जगाते विभिन्न आन्दोलन

जन्मशताब्दी वर्ष तक सवा लाख युगसृजेता युवतियाँ समाज को समर्पित करने के प्राणवान प्रयास

मध्य प्रदेश में हर जिले में मिशन के प्रति पूरी तरह समर्पित 2400 युवतियों-कन्याओं का संगठन तैयार करने का लक्ष्य है।

बटुकों के मुण्डन संस्कार करातीं खण्डवा की मिशननिष्ठ प्रशिक्षित बेटियाँ

खण्डवा। मध्य प्रदेश : खण्डवा के जिला संगठन का परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के अवसर पर पूरे मध्य प्रदेश की 1,25,000 युग निर्माणी बेटियों को समर्पित करने का संकल्प एक असाधारण और अद्भुत संकल्प कहा जा सकता है। श्री ब्रजेश पटेल के नेतृत्व में चल रहे यह प्रयास बहुत हद तक सफल भी हो रहे हैं। इसके अन्तर्गत जिले के गाँव-गाँव में मिशन के प्रति श्रद्धावान, संस्कारवान और समर्पित बेटियों की टोलियाँ सक्रिय हैं, जो परम पूज्य गुरुदेव के बताए जीवन-आदर्शों को अपनाते हुए अपनी पढ़ाई भी करती हैं और आवश्यकता होने पर गायत्री परिवार के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से अन्य क्षेत्रों की बालिकाओं में भी ऐसा ही युग निर्माणी उत्साह जगा रही हैं।

श्री ब्रजेश पटेल ने बताया कि उनके जिले में ऐसी प्राणवान बेटियों की टोली तैयार कर ली गई है जो जहाँ भी 108 कुण्डीय, 51 कुण्डीय, 24 कुण्डीय जैसे बड़े कार्यक्रम होते हैं, वहाँ प्रयाज कार्यक्रमों के माध्यम से जन-जागरण हेतु जुट जाती हैं। सघन जनसंपर्क के द्वारा वे गाँव-गाँव, नगर-नगर संस्कारवान युवतियों और कन्याओं का संगठन तैयार कर रही हैं। वे स्वयं यज्ञ, संस्कारों का मंच संचालन करते हुए लोगों पर गहरी छाप छोड़ती हैं।

खण्डवा शाखा का मध्य प्रदेश के हर जिले से मिशन के प्रति पूरी तरह समर्पित 2400 युवतियों-कन्याओं का संगठन तैयार करने का लक्ष्य है। इस दिशा में प्राणवान प्रयास हो रहे हैं और शानदार सफलता मिल रही है। समाचार भेजे जाने के समय एक टोली सिंगरौली जिले के चुरकी गाँव में होने जा रहे 24 कुण्डीय गायत्री यज्ञ के प्रयाज में सक्रिय थी। टोली ने बड़ी संख्या में मुंडन संस्कार सम्पन्न कराए।

सबके संगठित और संकल्पित प्रयासों से ही होगा धरती पर स्वर्ग का अवतरण - **डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी**

बंगरा, झाँसी। उत्तर प्रदेश

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के 10 नवम्बर को बंगरा पहुँचने पर पूरे मनोयोग से युग निर्माण आन्दोलन के लिए सक्रिय कार्यकर्त्ताओं में वासंती उल्लास का संचार हुआ। केवल कार्यकर्त्ता ही नहीं, नगर के अनेक गणमान्यों ने उनका भव्य स्वागत किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी से देवस्थापना चित्र ग्रहण करते पूर्व मंत्री श्री आर्य

डॉ. चिन्मय जी सर्वप्रथम गायत्री शक्तिपीठ के दर्शन-पूजन के लिए पहुँचे। प्रदेश के पूर्व मंत्री श्री बिहारीलाल आर्य ने सपरिवार उनका भव्य स्वागत किया। ब्लॉक प्रमुख इंजीनियर भारती आर्य, थानाध्यक्ष उल्दन अजमेर सिंह भदौरिया सहित अनेक गणमान्य एवं समाजसेवियों के द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने अपने संदेश से जनमानस को विश्वास दिलाया कि परम पूज्य गुरुदेव का मनुष्य में देवत्व के जागरण एवं धरती पर स्वर्ग के अवतरण का संकल्प पूरा होकर रहेगा, लेकिन इसके लिए सबके समन्वित, संकल्पित और संगठित प्रयासों की आवश्यकता है। गायत्री शक्तिपीठें ऐसे ही क्रान्तिकारी देवमानवों की छावनियाँ हैं, जो परम पूज्य गुरुदेव के युगनिर्माणी संकल्पों को पूरा करने के लिए अपने समयदान और अंशदान की आहुतियाँ समर्पित कर रही हैं।

इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ की कार्यकारिणी के सभी प्रमुख परिजन सर्वश्री सुरेशचंद्र बबेले, रामनारायण गुप्ता, बृजमोहन सिंह परिहार, जयप्रकाश विश्वकर्मा, श्यामलाल साहू सहित आसपास के क्षेत्रों से आए सैकड़ों कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

आत्मीयता की अनुभूति कराने वाला अभियान

जन्मदिन-विवाह दिन पर स्वजनों की शुभकामनाएँ कराती हैं विराट देव परिवार का अंग-अवयव होने की अनुभूति

मुम्बई। महाराष्ट्र : परम पूज्य गुरुदेव कहा करते थे कि आज के युग में हर व्यक्ति को अपने जीवन के दो पर्व अवश्य मनाने चाहिए-जन्मदिन और विवाह दिन। यह दो पर्व आत्मबोध और आत्मीयता का बोध कराने वाले होते हैं। यदि इन्हें सही ढंग से मनाया जाए तो ये भावी जीवन को उत्कृष्टता की दिशा में ले जाने के लिए संकल्पित भाव से आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाले होते हैं।

आज ये दो विशेष दिन अधिकांश लोगों द्वारा मनाए तो जाते हैं, लेकिन दिशा और प्रेरणाएँ वह नहीं होती, जो होनी चाहिए। आज तो लोगों के मन-मस्तिष्क पर भौतिकतावादी संस्कृति बुरी तरह हावी है। धन की होली और दिखावे का उन्माद ऐसे कार्यक्रमों की सफलता का मानदण्ड बनते जा रहे हैं। लोग चंदन के बगीचे की तरह मूल्यवान और महकते जीवन को उसके वास्तविक मूल्य से अनभिज्ञ रहते हुए धन के लोभ में कोयला की तरह बेच रहे हैं।

दिया, मुम्बई ने आत्मीय स्वजनों के जीवन को इन दो विशिष्ट पर्वों पर युगऋषि के अनुरूप विचार और संस्कारों से सुवासित एवं समृद्ध करने के लिए पिछले कई वर्षों से एक विशेष अभियान चला रखा है। उनके द्वारा हर दिन हजारों परिजनों को उस दिन जिनका जन्मदिन या विवाहदिन होता है, उसकी सूचना दी जाती है। बहुत-से लोग उन्हें शुभकामना संदेश भेजते हैं। बहुत-सी शाखाएँ उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए विशेष यज्ञाहुतियाँ प्रदान करती हैं। अनेक लोग अपने नियमित वृक्षारोपण अभियान में उनके विशिष्ट दिवस के निमित्त वृक्षारोपण करते हैं।

जिनका जन्मदिन या विवाहदिन होता है, वे फोन या संदेश से लोगों की शुभकामनाएँ पाकर अभिभूत हो जाते हैं। बहुत-से लोग बताते हैं कि यह सत्प्रेरणाएँ शुभ संकल्पों के साथ युगऋषि के बताए मार्ग पर चलते रहने का साहस बढ़ाती हैं। एक विराट देव परिवार की आत्मीयता की विलक्षण अनुभूति कराती हैं। सचमुच आत्मीयता संवर्धन का यह एक बहुत ही विलक्षण और प्रेरणादायी अभियान है।

ग्रामीण क्षेत्र में जनजागरण के निकल रही हैं प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं की टोलियाँ

ये टोलियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में जनजागरण रैलियाँ व प्रभात फेरी निकालेंगी। उनके द्वारा पौधारोपण, दीवार लेखन, स्वच्छता अभियान, गर्भोत्सव संस्कार, यज्ञ, साहित्य वितरण, नशा मुक्ति अभियान और योग स्वास्थ्य शिविर जैसे कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाएगा।

जयपुर। राजस्थान : जयपुर के जिला संगठन ने परम वन्दनीया माताजी की जन्म शताब्दी-सन् 2026 तक जिले के हर गाँव में मिशन के सृजनात्मक आन्दोलनों को पहुँचाने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए अनेक टोलियों का गठन किया जा रहा है, जो गाँव-गाँव जाकर विभिन्न प्रचारात्मक एवं सृजनात्मक कार्यक्रमों को सम्पन्न करायेंगी। गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी, जयपुर में आयोजित एक कार्यकर्त्ता संगोष्ठी में इस आशय का निर्णय लिया गया।

जयपुर जिला समन्वयक श्री संतोष गुप्ता ने बताया कि सर्वश्री रामावतार खंडेलवाल, अशोक दीक्षित, महेंद्र कुमार, मुकेश माथुर, गोपाल पारीक, सरदार सिंह, सरोज कंवर और पाबूदान कुमावत की टोलियाँ अपना जनजागरण अभियान प्रारम्भ कर चुकी हैं। इनके अलावा कई और टोलियों का गठन किया जा रहा है।

पत्रकार एवं वरिष्ठ परिजनों का सम्मान समारोह

24 गाँव व 24 वार्ड में सक्रियता का संकल्प

गंजबासौदा, विदिशा। मध्य प्रदेश

गायत्री प्रज्ञापीठ में 'युग निर्माण में पत्रकारिता का योगदान' विषय पर संगोष्ठी हुई। मध्य जोन के सह समन्वयक श्री प्रभाकांत तिवारी एवं भोपाल उपजोन समन्वयक श्री रामचंद्र गायकवाड़ ने प्रमुख रूप से विषय पर प्रकाश डाला। श्री प्रभाकांत तिवारी ने परम पूज्य गुरुदेव की पत्रकारिता का उदाहरण देते हुए कहा कि पत्रकार समाज को दिशा देने वाला वर्ग है। उसे अपने पत्रकारिता धर्म का पूरी ईमानदारी से पालन करना चाहिए। सकारात्मक पत्रकारिता समाज के उत्कर्ष में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

श्री रामचंद्र गायकवाड़ ने बताया कि मानव में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण हो, इसी मनोभाव के साथ स्थानीय संगठन 24 गाँव एवं 24 वार्ड में सक्रियता को गति प्रदान करेगा।

संगोष्ठी के उपरांत सम्मानित हुए गणमान्य

तहसील समन्वयक श्री रमाकांत तिवारी ने बताया कि समारोह में वरिष्ठ परिजन एवं पत्रकारों का सम्मान किया गया। इस क्रम में श्री कांति भाई शाह, एमपीएस तोमर, जेपी श्रीवास्तव, मुन्नीबाई पांडे, एसआर वर्मा, वीवी सिंह, श्यामा देवी सक्सेना का सम्मान किया गया।

डाइट का प्रशिक्षण शिविर : गुरुजनों को नैतिक दायित्वों की याद दिलाई

भरतपुर। राजस्थान

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) भरतपुर ने चार जिलों भरतपुर, धौलपुर, करौली और सवाईमाधोपुर के राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों के लाभार्थ दिनांक 12 नवम्बर 2022 को एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। भरतपुर नगर में आयोजित इस कार्यशाला में गायत्री परिवार से प्रभावित डाइट के प्रधानाचार्य श्री प्रमोद शर्मा के आमंत्रण पर उपजोन प्रभारी श्री नरेन्द्र जोशी और श्री श्याम सुंदर शर्मा शिक्षकों को संदेश देने पहुँचे। उन्होंने शिक्षकों से बच्चों को शिक्षित करने के साथ-साथ संस्कारवान बनाने पर विशेष ध्यान देने का आग्रह किया।

श्री श्याम सुंदर शर्मा जी ने शिक्षा-विद्या का अंतर स्पष्ट करते हुए कहा कि शिक्षा सीखने-सिखाने तक सीमित है, लेकिन विद्या अनुभव और आचरण में उतारने से बढ़ती है। उन्होंने कहा कि वाहन चलाने के नियम कोई पढ़कर भी सीख सकता है, लेकिन वाहन चलाने का कौशल तो अभ्यास से ही आता है। उसी प्रकार संस्कार साधना से निखरते हैं, जिनका अभ्यास विद्यार्थियों को कराया जाना चाहिए।

शिविर को सम्बोधित करते गायत्री परिवार के प्रतिनिधि श्री नरेन्द्र जोशी

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने शिक्षकों को स्वयं अपने व्यक्तित्व को निखारने और अपने अनुभवों का लाभ विद्यार्थियों को देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ गुण और कौशल बढ़ाने का प्रयास करना शिक्षकों की नैतिक जिम्मेदारी है। जैसे नाव चलाने के लिए स्नातकोत्तर की डिग्री आवश्यक नहीं, उसके लिए मजबूत कलाई, चौड़े सीने और हिम्मत की आवश्यकता होती है, वैसे ही सही मायनों में जीवन जीने के लिए उन सद्गुणों की आवश्यकता होती है, जो व्यक्तित्व को निखारते, पात्रता बढ़ाते और व्यवहार कुशल-विनम्र बनाते हैं।

डाइट प्रधानाचार्य सहित सभी शिक्षक गायत्री परिजनों के उदबोधन से प्रभावित हुए, अपने नैतिक दायित्वों के प्रति अधिक जागरूक रहने का आश्वासन दिया।

दूसरे तुम्हें क्या कहते हैं, इस पर ध्यान मत दो। तुम अपनी दृष्टि में अच्छे बनो, महान बनो।

गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज का 42वाँ वार्षिकोत्सव

जीवन महान उद्देश्यों के लिए जियें। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव अत्यंत उमंग और उल्लास के साथ मनाया गया। दिनांक 30 नवम्बर 2022 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मृत्युंजय सभागार में अत्यंत मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के साथ इसका भव्य समापन हुआ। इस अवसर पर बच्चों का उत्साहवर्धन करने सर्वोच्च संरक्षक-अभिभावक श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी पधारे। उन्होंने आशीर्वचन देते हुए बच्चों को दुनिया के अंधानुकरण की बजाय परम पूज्य गुरुदेव जैसे महापुरुषों का अनुगमन करने और महान उद्देश्य के लिए जीवन जीने की प्रेरणा दी।

इससे पूर्व 29 नवम्बर को गायत्री विद्यापीठ प्रबंध मण्डल की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या ने ध्वजारोहण के साथ वार्षिकोत्सव का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि बचपन स्वयं को उत्कृष्टता के साँचे में ढालने की अवस्था है। गायत्री विद्यापीठ के बच्चों को उच्च विचार और अच्छे संस्कारों का जो वातावरण मिला है, उसका सभी को लाभ लेना चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने प्रतिभागी विद्यार्थियों को खेल भावना का परिचय देने एवं अनुशासनों का पालन करने की शपथ दिलाई।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी समापन सत्र में नन्हें बच्चों का उत्साहवर्धन करने पहुँचे

दो दिनों में नींबू दौड़, स्कूल के लिए तैयार होना, बोतल में पानी भरना, बतख दौड़, मेढ़क दौड़, रिले दौड़, गायत्री मंत्र लेखन, भारत का नक्शा पहचानना आदि प्रतियोगिताएँ हुईं। विजेताओं को आदरणीया शेफाली पण्ड्या तथा प्रधानाचार्य श्री सीताराम सिन्हा सहित वरिष्ठ पदाधिकारियों ने सम्मानित किया।

समापन अवसर पर विद्यापीठ के समस्त शिक्षक व कर्मचारी एवं शान्तिकुञ्ज, हरिपुर कलाँ, हरिद्वार, भोपतवाला के छात्र-छात्राओं के अभिभावक उपस्थित थे। श्रीमती शेफाली पण्ड्या ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

राष्ट्र-निर्माण की नींव रखने का अवसर

श्रद्धेया शैल जीजी ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ अपना संदेश भेजा था। इसमें उन्होंने गायत्री विद्यापीठ के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि बाल्यावस्था व्यक्तित्व को गढ़ने और सँवारने के साथ समाज और राष्ट्र के नवनिर्माण की नींव रखने का अवसर भी होता है।

गायत्री विद्यापीठ प्रबंध मण्डल की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या प्रतिभागी बच्चों को सम्बोधित करते हुए

लोकरंजन से लोकमंगल : समापन समारोह में कु. स्तुति, एकता एवं सृष्टि के ग्रुप द्वारा प्रस्तुत ''बाँसुरी कृष्ण की बाजे प्रेम से राधा नाचे रे...'' गीत नृत्य को दर्शकों ने बहुत सराहा। गढ़वाली समूह नृत्य, 'स्वच्छ भारत' विषय पर एकांकी, जल बचाने के विविध उपायों पर लघुनाटिका का मंचन आदि सामाजिक जागरूकता बढ़ाने वाले थे। उद्घाटन समारोह में भी बच्चों ने समूह नृत्य, योगासन जैसे कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया।

तिरंगा : 42वें वार्षिकोत्सव की थीम 'तिरंगा' थी। तिरंगे के रंग में ही पूरे परिसर को सजाया गया था।

राज्यपाल माननीया आनन्दी बेन पटेल को युगऋषि का वाङ्मय भेंट किया

लखनऊ। उत्तर प्रदेश : गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ ने अपने विचार क्रान्ति ज्ञानयज्ञ अभियान के अन्तर्गत प्रदेश की राज्यपाल माननीया आनन्दी बेन पटेल को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित वाङ्मय साहित्य के समस्त 79 खण्ड भेंट किए। यह उनके द्वारा राजभवन, सचिवालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थान, विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, शिक्षण संस्थान, मीडिया जगत के ग्रंथालयों में की जा रही युगऋषि के समस्त वाङ्मय खण्डों की स्थापना का 375वाँ कार्यक्रम था। महामहिम को यह साहित्य रचनात्मक ट्रस्ट गायत्री ज्ञान मंदिर, इन्दिरा नगर, लखनऊ की ट्रस्टी श्रीमती ऊषा सिंह ने अपने प्रिय जीवनसाथी स्व. राजेन्द्र सिंह की पावन स्मृति में भेंट किया है।

राज्यपाल महोदया ने गायत्री परिवार की सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए युगसाहित्य के प्रति अपनी रुचि व्यक्त की तथा उसके अध्ययन का आश्वासन दिया। इस अवसर पर श्री उमानंद शर्मा, श्री वी.के. श्रीवास्तव, श्री देवेन्द्र सिंह, श्रीमती उषा सिंह, श्री अखण्ड प्रताप सिंह तथा राजभवन के अधिकारीगण उपस्थित थे।

राजभवन में वाङ्मय स्थापना करते गायत्री ज्ञान मन्दिर, लखनऊ के प्रतिनिधि

जी.एस.आर.एम. मेमोरियल कॉलेज ऑफ नर्सिंग में

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ द्वारा अगला वाङ्मय स्थापना समारोह जी.एस.आर.एम. मेमोरियल कॉलेज ऑफ नर्सिंग, कानपुर रोड, लखनऊ के केन्द्रीय पुस्तकालय में सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट गायत्री मंदिर इन्दिरा नगर लखनऊ के सक्रिय कार्यकर्ता श्री हंस जी ने अपने पूर्वजों की स्मृति में सम्पूर्ण 79 खण्डों की स्थापना की। केन्द्र व्यवस्थापक श्री उमानंद शर्मा ने युग साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डाला तथा छात्र-छात्राओं एवं संकाय सदस्यों को अखण्ड ज्योति पत्रिका भेंट की। इस अवसर पर पी.डब्लू.डी. के पूर्व ई.एन.सी. श्री वी.के. श्रीवास्तव, संस्था के निदेशक डॉ. एस.के. सिंह ने भी अपने विचार रखे तथा प्रधानाचार्या डॉ. लुबना ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

श्री उमानन्द शर्मा विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में रक्तदान शिविर

254 यूनिट रक्तदान हुआ

74वें एनसीसी (नेशनल कैडेड कॉर्प) दिवस-26 नवम्बर के अवसर पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। माँ गंगे ब्लड सेंटर हरिद्वार के सहयोग से आयोजित इस शिविर में कुल 254 यूनिट रक्तदान हुआ। एनसीसी एवं एनएसएस के युवा, विद्यार्थी, अधिकारी, कर्मचारी सहित शान्तिकुञ्ज के स्वयंसेवकों ने रक्तदान किया। देसंविवि. के कुलपति श्री शरद पारधी एवं मां गंगे ब्लड सेंटर के निदेशक श्री नरेन्द्र नेगी ने संयुक्त रूप से वैदिक मंत्रोच्चार के बीच दीप प्रज्वलन कर रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने विशेष संदेश भेजकर अपने विद्यार्थियों को रक्तदान के लिए प्रेरित किया। उन्होंने रक्तदान को जीवन बचाने वाला अत्यंत पुण्यदायी कार्य बताया। उन्होंने कहा कि रक्तदान कर स्वयं भी हार्ट अटैक, कॉलेस्ट्रोल, एनीमिया जैसी अनेक रक्त संबंधी बीमारियों से बचा जा सकता है। रक्तदान से पेनक्रियाज और लीवर में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और नई रक्त कोशिकाओं का निर्माण भी होता है। हमें दूसरों की सहायता करने के साथ स्वयं के स्वास्थ्य लाभ के लिए भी समय-समय पर रक्तदान करते रहना चाहिए।

कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी ने बहिनों को विशेष रूप से प्रोत्साहित करते हुए कहा कि एक शोध के अनुसार साठ प्रतिशत महिलाओं को विभिन्न अवसरों पर रक्त की जरूरत पड़ती है। प्रसन्नता की बात है कि पहले 5 से 10 प्रतिशत महिलाएँ ही रक्तदान करती थीं, अब भाइयों के साथ बहिनों में भी जागरूकता आ रही है।

रक्तदान पुण्यदायी ही नहीं, स्वयं के स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत लाभकारी है।
- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

माँ गंगे ब्लड सेंटर के निदेशक श्री नरेन्द्र नेगी ने बताया कि देसंविवि में आयोजित शिविर में एकत्रित किये गये रक्त में से 65 प्रतिशत रक्त बहिनों ने दिया है। इस दौरान कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन, उप कुलसचिव डॉ. उमाकांत इंदौलिया, लेफ्टीनेंट पवन राजौरिया (ए.एन.ओ.) आदि ने रक्तदान करने के लिए लोगों को प्रेरित किया।

युवा संगठन को मिली नई ऊर्जा

शान्तिकुञ्ज में जहानाबाद, बिहार से आए 350 शिविरार्थियों के लाभार्थ 14 से 16 नवंबर की तिथियों में विशेष शिविर सम्पन्न हुआ। क्षेत्र में वृक्षारोपण आदि विविध रचनात्मक आन्दोलनों को गति दे रहे कार्यकर्त्ता यहाँ से नई ऊर्जा, नई प्रेरणा से सम्पन्न होकर अपने संगठन को मजबूत करने के संकल्प के साथ लौटे। 150 लोगों ने गुरु दीक्षा ली।

विदेश समाचार

युगशक्ति गायत्री के विस्तार के प्रशंसनीय प्रयास

चिंगोला। जाम्बिया

जाम्बिया का उत्तरी भूभाग 'कॉपर बेल्ट' कहा जाता है। वहाँ गायत्री परिवार के प्रति निष्ठावान परिजन श्री राकेशभाई पटेल का 'रुद्र कॉपर लिमिटेड' के नाम से एक विशाल कॉपर प्लांट है। 12 नवम्बर-संकष्ट चतुर्थी के अवसर पर उन्होंने अपने प्लांट में गायत्री यज्ञ का आयोजन कर अनेक मित्रों और व्यापार जगत के साथियों को युगशक्ति गायत्री को जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी।

यज्ञ का संचालन वडोदरा, गुजरात निवासी श्री भानुभाई पटेल ने किया। उन्होंने गायत्री एवं यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप की व्याख्या की। घर-परिवार में अपनी संस्कृति के प्रति आस्था बढ़ाते रहने के लिए जन्मदिन, विवाहदिन एवं पुंसवन संस्कार जैसे सभी संस्कारों और पर्वों को गायत्री यज्ञ-दीपयज्ञ के साथ अवश्य मनाने की प्रेरणा दी। यज्ञ में 45 लोगों ने भाग लिया। यज्ञ संचालक महोदय ने उन्हें भारत आने पर शान्तिकुञ्ज के दर्शन अवश्य करने का आमंत्रण दिया। बच्चों ने यज्ञाहुतियाँ अर्पित करते हुए विशेष आनन्द की अनुभूति की।

वृहद पुस्तकालय का शुभारंभ

कोलकाता। पश्चिम बंगाल : गायत्री चेतना केन्द्र रामचंद्रपुर, नरेन्द्रपुर कोलकाता के तत्वावधान में गायत्री चेतना फाउंडेशन कॉलेज द्वारा विद्यार्थियों एवं प्रबुद्ध वर्ग के लिए वृहद पुस्तकालय की स्थापना की गई। इसका उद्घाटन दिनांक 12 नवंबर 2022 को रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उप कुलपति डॉ. पवित्र सरकार, प्रो. रामप्रसाद डे एवं गायत्री चेतना फाउंडेशन की चेयरमैन श्रीमती अंजना मेहरिया की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस पुस्तकालय में आधुनिक वैज्ञानिक साहित्य के साथ-साथ वैज्ञानिक अध्यात्मवाद सम्बन्धित साहित्य का भी संकलन किया गया है।

पुस्तकालय के उद्घाटन अवसर पर 'विज्ञान और अध्यात्म एक-दूसरे के पूरक' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। प्रबुद्ध वर्ग एवं विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया।

कारागार में कराती हैं अखण्ड ज्योति का स्वाध्याय

सतना। मध्य प्रदेश : गायत्री परिवार के प्रति आस्थावान महिला बन्दी श्रीमती ममता पाठक केन्द्रीय कारागार सतना में महिला बंदियों के बीच दैनिक स्वाध्याय का क्रम चलाती हैं। वे एक प्रोफेसर रही हैं। स्वयं अखण्ड ज्योति पढ़ने, सुनाने, समझाने के साथ अन्य बंदियों को भी अखण्ड ज्योति के रोचक संस्मरण सुनाने के लिए प्रेरित करती हैं। महिला प्रहरी श्रीमती रेनू त्रिपाठी के सहयोग से चल रहे स्वाध्याय के साथ चालीसा पाठ, गायत्री साधना और सूर्य का ध्यान जैसे आध्यात्मिक कार्यक्रमों से कई महिला बन्दी जुड़ रही हैं।

अपने पापों को देखते रहना और उन्हें प्रकाशित कर देना ही पापों से छूटने का एक प्रधान उपाय है।

राष्ट्रीय कर्मठ महिला कार्यकर्त्ता शिविर : दिनांक 1 से 5 दिसम्बर 2022

गुरुसत्ता का दर्द बाँटने के लिए उमड़े अंतस् के भाव

परम वन्दनीया माताजी की जन्मशताब्दी और परम पूज्य गुरुदेव के द्वारा अखण्ड दीप प्राकट्य की शताब्दी-2026 से जुड़े महान लक्ष्य और कार्यकर्त्ताओं को उनके उत्तरदायित्वों का बोध कराने के लिए शान्तिकुञ्ज में दो विशेष सत्रों का आयोजन हो रहा है। 1 से 5 दिसम्बर की तारीखों में पूरे देश की प्रमुख कर्मठ कार्यकर्त्ता बहिनों तथा 8 से 12 दिसम्बर में कार्यकर्त्ता भाइयों के विशेष शिविर अयोजित हो रहे हैं। समाचार लिखे जाने तब आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के उद्बोधन के साथ प्रथम सत्र का शुभारंभ हो चुका है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपने प्रथम उद्बोधन में परम पूज्य गुरुदेव के ईश्वरतुल्य विराट व्यक्तित्व का बोध कराते हुए उनके साथ जुड़ने के सौभाग्य की याद दिलाई। उन्होंने कहा, ''हमारा प्रमुख दायित्व है कि हम पीड़ित मानवता के प्रति पूज्य गुरुदेव के दर्द को अनुभव करें और आत्मसाधना से अपने भीतर के देवत्व को विकसित कर समाज को समुन्नत व धरती को स्वर्ग बनाने के लिए मानवीय संवेदनाओं को जगाने के अभियान में तत्परता से जुट जाएँ।''

उन्होंने कहा, ''मेरा दर्द यह है कि हमारे कदम शिथिल पड़ गए हैं। जिस भाव के साथ पूज्य गुरुदेव के दर्द को हम अनुभव करते हैं, वही भाव हम अपनी अगली पीढ़ी को सौंपकर जाएँ। परम पूज्य गुरुदेव एवं माताजी हमारे जीवन की धड़कन हैं, वे हमारा जीवन है। यह अनुभूति और विश्वास हमारी अगली पीढ़ी में भी विकसित होना चाहिए।''

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए

इस सम्मेलन में देश के सभी जोन के प्रत्येक जिले से आई 2000 से अधिक बहिनें भाग ले रही हैं। जोन समन्वयक डॉ. ओ.पी. शर्मा जी ने बताया कि इस शिविर में विचारों के आदान-प्रदान को प्रमुखता दी जा रही है। समूह चर्चा में व्यक्तिगत एवं संगठनात्मक स्तर पर परस्पर समन्वय बढ़ाते हुए हम अपनी सक्रियता को कितना बढ़ा सकते हैं, इस पर मंथन किया जा रहा है।

इस शिविर को श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी, जोन समन्वयक डॉ. ओ.पी. शर्मा जी, संगठन-शक्तिपीठ समन्वयक श्री योगेन्द्र गिरि जी, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शरद पारधी जी, श्रीमती शेफाली पण्ड्या, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की समन्वयक डॉ. गायत्री शर्मा आदि वरिष्ठ वक्ताओं ने विविध विषयों पर संबोधित करते हुए बहिनों का मार्गदर्शन किया।

श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने समूहवार भेंट की। उनके स्नेहासिक्त आशीर्वादों ने बहिनों की श्रद्धा-संवेदना में नए संकल्पों का समावेश किया।

सक्रियता की दिशाधारा

प्रतिदिन दोपहर समूह चर्चा में नए निष्कर्ष, निर्धारण और संकल्पों का क्रम रहा। प्रत्येक जोन प्रभारी एवं सहायकों ने चर्चा का समन्वय किया। भावी सक्रियता के संकल्पों में प्रमुख हैं-

पत्रिकाएँ : मिशन की विभिन्न पत्रिकाओं की सदस्यता का विस्तार

स्थापनाएँ : मिशन के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक परिजन के घर देवस्थापना, युगसाहित्य स्थापना और गंगाजली की स्थापना

व्यक्तित्व परिष्कर : बहिनों को साधना, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, कन्या/किशोर कौशल शिविर, बाल संस्कार शाला, महिला जागृति जैसे अभियानों की जिम्मेदारी सौंपना।

जन्मशताब्दी ज्ञानघट : जन्मशताब्दी समारोह में भागीदारी स्वरूप प्रत्येक सक्रिय कार्यकर्त्ता से अभी से ही न्यूनतम एक या पाँच रुपये रोज का अंशदान निकालना आरंभ करने का संकल्प दिलाना।

गायत्री परिवार-सबसे बड़ा प्रगतिशील संगठन

गायत्री परिवार सबसे बड़ा प्रगतिशील संगठन है। परम पूज्य गुरुदेव वह कर गए, जो लोगों द्वारा सपने में भी कर पाना संभव नहीं था।

जिस भाव के साथ पूज्य गुरुदेव के लक्ष्य को और उनके दर्द को हम अनुभव करते हैं, वही भाव हम अपनी अगली पीढ़ी को सौंपकर जाएँ।

– आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

स्नेह-संवेदनाओं की साकार प्रतिमा श्रद्धेया शैल जीजी

जन्मदिवस : गीता जयन्ती-4 दिसम्बर 2022

श्रद्धेया शैल जीजी व श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी दीपयज्ञ के दीप प्रज्वलित करते हुए एवं स्वजनों की शुभकामनाएँ ग्रहण करते हुए

मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी-4 दिसम्बर 2022 को शान्तिकुञ्ज में स्नेह सलिला शैल जीजी का 70वाँ जन्मदिवस भरपूर उमंग और उल्लास के साथ मनाया गया। राष्ट्रीय कर्मठ कार्यकर्त्ता बहिनों के शिविर में उपस्थित पूरे देश की अग्रणी बहिनों के साथ शान्तिकुञ्जवासी, देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार और गायत्री विद्यापीठ के बच्चों ने अत्यंत पुलकित हृदय से अपने श्रद्धा, समर्पण और भावभरे सहयोग के आश्वासन के साथ उन्हें दीर्घ-यशस्वी जीवन एवं मिशन के प्रभावशाली नेतृत्व के लिए शुभकामनाएँ प्रदान कीं। परिजनों ने पुष्पहार, पुष्पगुच्छ के अलावा गीत, चित्र एवं विभिन्न कलाकृतियों के साथ अपने भावों को गूँथा। देश-विदेश से सोशल मीडिया पर भी परिजनों की शुभकामनाओं का सिलसिला दिनभर चलता रहा।

आत्मबल सम्पन्न चरित्रवान व्यक्ति ही दुनिया को सही दिशा दिखा सकते हैं।

संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में डॉ. चिन्मय जी का वक्तव्य

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न आध्यात्मिक संगठनों के साथ चर्चा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज को भी इसमें अपने विचार प्रस्तुत करने का आमंत्रण मिला। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी ने शान्तिकुञ्ज का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्र ही नहीं, सम्पूर्ण मानवता की प्रगति के लिए सनातन सांस्कृतिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में अपने विचार रखे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने होटेल अशोका में 30 नवम्बर को आयोजित सभा में उपस्थित सैकड़ों विद्वत्जनों को सम्बोधित करते हुए परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज व्यक्ति को किसी और से नहीं, बल्कि स्वयं से ही लड़ने की आवश्यकता है। हमें अपने भीतर आत्मबल और आत्मविश्वास जगाने की आवश्यकता है। आत्मबल सम्पन्न चरित्रवान व्यक्ति ही दुनिया को सही दिशा दिखा सकते हैं।

देश के मानचित्र में उभरता आध्यात्मिक आस्था का एक अनुपम केन्द्र

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जन्मस्थली आँवलखेड़ा

परम पूज्य गुरुदेव की जन्मभूमि आँवलखेड़ा, जहाँ विनिर्मित है सूर्य मंदिर व ब्रह्मकमल, कीर्ति स्तम्भ और शक्तिपीठ का अभिनव स्वरूप

करोड़ों लोगों की आस्था का केन्द्र जन्मभूमि आँवलखेड़ा अपने अभिनव स्वरूप में बन कर तैयार है। आने वाले दर्शकों और पर्यटकों को यहाँ अयोध्या और मथुरा की ही तरह उत्तर प्रदेश की एक और अवतारी चेतना की जन्मभूमि के दर्शन तो होंगे ही, साथ ही युग परिवर्तन की वर्तमान वेला में उन्हें युगशक्ति गायत्री के दर्शन, युगऋषि के जीवन-आदर्श और सृजनात्मक सक्रियता के उन सूत्रों का भी दिग्दर्शन कराया जाएगा, जिन्हें वैश्विक स्तर पर विस्तार दिया जाना है। आगामी कुछ महीनों में ही इसका लोकार्पण होने जा रहा है।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी दिनांक 17 नवम्बर 2022 को आँवलखेड़ा में हुए नवनिर्माण का निरीक्षण करने

श्रद्धेय डॉ. साहब-जीजी कार्यकर्त्ताओं के संग

पहुँचे। इस अवसर पर निर्माण कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे नागपुर के मिशननिष्ठ व्यवसायी श्री सत्यनारायण नुवाल और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शरद पारधी जी भी उनके साथ थे। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री घनशाम देवांगन, श्री सुरेन्द्र वर्मा ने उन्हें शक्तिपीठ पर नवनिर्मित ऋषियुग्म के समाधि स्थल, महाकाल मंदिर, वहाँ चल रही गौशाला, प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, स्वावलम्बन केन्द्र, माता दान कुंवरी इंटर कॉलेज, बालिकाओं के महाविद्यालय आदि का निरीक्षण भी कराया।

लिथुआनिया की राजदूत का स्वागत

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 30 नवम्बर को दिल्ली प्रवास पर थे। इस अवसर पर वे लिथुआनिया गणराज्य के दूतावास में नवनियुक्त राजदूत माननीया डायना मिकेविसीन का अभिनन्दन करने पहुँचे। उन्हे देव संस्कृति विश्वविद्यालय और बाल्टिक देशों के संबंधों की जानकारी दी। देसंविवि में स्थित बाल्टिक कल्चरल सेंटर के प्रगति विवरणों से अवगत कराया। माननीय प्रतिकुलपति जी ने माननीय राजदूत के कार्यकाल में परस्पर सहयोग से दोनों देशों के संबंधों को अधिक दृढ़ता प्रदान करने का आश्वासन दिया, विश्वास व्यक्त किया।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.12.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23